मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ५ | बुधवार १० जनवरी १९७९ | संख्या ८

ज्ञान व कर्म की नवीन व्याख्या

सत्संग परम संत परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक ९-७-७८

मारग बिहंग बतावें संत जन।
कौने घर से जिव की उत्पति, कौने घर को जावै।
कहां जाइ जिव प्रलय होइगा, सो सुर तहां चढ़ावै।
गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सुई नखा से जावै।
भू मंडल से परिचय कर ले, पर्वत धौल लखावै।
द्वादस कोस साहिब कै डेरा, तहां सुरत ठहरावै।
वा को रंग रूप नाहिं रेखा, कौन पुरुष गुन गावै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जो यह पद लखि पावै।
अमर लोक में झुलै हिंडोला, सतगुरु सबद सुनावै।

राधास्वामी ! मैं इन बाणियों को सुन कर सारा ज़ीवन इनको समझने का यत्न करता रहा । जो आदमी इस बाणी को पड़ेगा वह इसका क्या भाव समझेगा । मैंने क्या समझा ? यद्यपि अब समझाने की आवश्यकता महसूस नहीं होती और न ही सत्संग कराने को दिल चाहता है. मैं थक गया हूं । मेरा कर्म भोग है । वह कहते हैं 'सन्त जन मार्ग विहंगम बतावें' अगर कबीर साहिब होते तो उनसे पूछता कि तुम्हारा 'विहंगम मार्ग' क्या है ? मैंने जो समझा वह बताता हूं । विहंग पक्षी को कहते हैं । जिस प्रकार पक्षी उड़ता है उसी प्रकार विहंगम मार्ग में सुरत एक विचार को छोड़कर दूसरे विचार की ओर चलती जाती है । मान लो कि आज सुरत किसी चिन्ता में है उस चिन्ता को छोड़कर वह दूसरी ओर चली जायेगी । वहां से एक दम उड़ी और वहां चली गई । इस का नाम मार्ग विहंगम है । संत कहते हैं कि विहंगम मार्ग पकड़ो । विहंगम का क्या भाव है ? हम कहां से आये हैं ? हम जहां से आये हैं हमने वहां जाना है । इसका नाम विहंगम मार्ग है ।

मारग विहंग बतावें सन्तजन।
कौने घर से जिव की उत्पति, कौने घर को जावै।

मैं अपनी आत्मा से प्रश्न करता हूं। मुझे पता नहीं कबीर का क्या भाव है। जीव की उत्पति किस घर से होती है? एक तो शरीर है, शरीर जीव नहीं है। शरीर की उत्पत्ति मां के पेट से होती है। जीव और चीज़ है। जो चीज़ चिन्तन करती, सोचती, समझती, विचार करती और भान करती है उसका नाम जीव है। सोचना समझना कब पैदा होता है? जब शरीर में प्रकाश आता है तब सोचना समझना पैदा होता है। फिर उत्पत्ति कहां से होती है और हमारे अन्तर फुरना कहां से पैदा होती है? जिन्होंने अभ्यास किया है वे जानते हैं लेकिन दूसरों को समझाना कठिन है। अगर मानव प्रकाश और शब्द में चला जाये तो फिर फुरना नहीं फुरती। जब प्रकाश और शब्द में गति होती है तब फुरना फुरती है। हम जीव कहां से बनते हैं? इसका पता मुझे तुम लोगों से लगा। जब यह पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, जो फकीर चन्द तुम्हारे अन्तर पैदा होता है वह तुम्हारा अपना ही मन बनाता है

तो मेरे अन्तर जितनी फुरनायें फुरती हैं उन्हें मैं छोड़ जाता हूं। किसी रंग रूप और रेखा का विचार नहीं करता। मैं सीधा वहां जाता हू जहां प्रकाश और शब्द होता है। मेरे अन्तर जो चीज़ प्रकाश को देखतो और शब्द को सुनती है उसे मैं जीव कहता हूं। जब शब्द प्रकट होता है तब वह सुरत प्रकट होती है।

जब अपनी असली अवस्था अर्थात बे हालती में शब्द को सुनने से उसमें चेतनता आती है वह हमारी आद्द अवस्था है। वह असली जीव है। जो मन, चित, बुद्ध, अहंकार पैदा होते हैं यह भी जीव है। यह जीव है और बह हस्ती है। जब हमारे शरीर के अन्तर प्रकाश आता है तब हमारे अन्तर मन बुद्ध, चित्त और अहंकार पैदा होते हैं। मगर कोई ऐसी चीज़ है जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है जब वह बनती है उस समय जीव आता है मेरी समझ में जीव वहां से आता है। कबीर साहिब को पता होगा कि उनका क्या भाव है। मैं नहीं जानता :—

कहां जाई जिव प्रलय होइगी, सो सुर तहां चढ़ावै।

जहां से हम आये हैं अर्थात जो चेतनता हमारे अन्तर आद में पैदा हुई उसका पता मुझे तुम लोगों से लगा। तुम स्वयं करके देखो, किसी दिन बैठ जाओ। तुम्हारे मन के अन्तर विचार उठते हैं, शक्लें बनती हैं उन्हें छोड़ जाओ। क्या हो जायेगा, स्वयं आजमा कर देखो। यह अमल का विषय है कहने का नहीं। जब मुझे पता नहीं था तो मैं दाता दयाल का रूप बनाया करता था और उस रूप से अपने अन्तर बातें किया करता था। जब आप लोगों ने बताया कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर जाता है मैं तो जाता नहीं तो मुझे पता लग गया कि मेरे अन्तर जो फुरना फुरती है, रंग रूप पैदा होते हैं यह असल में बाहर से नहीं आते, मेरे अपने मन के ही हैं तो मैं मन को छोड़ जाता हूं अर्थात रंग रूप, रेखा, बातें करना, आशा रखना सबको छोड़ जाता हूं। सन्तों का मार्ग केवल उनके लिए है जिन्हें अपने घर जाने की आवश्यकता है। यह मार्ग संसार वालों के लिए विल्कुल नहीं है यह झूठी बात है। तुम्हें उस समय पता लगेगा कि हम कहाँ से आये हैं। विहगम मार्ग क्या हुआ? जिसे सत्संग से यह पता लग जाता है वह

आनन्द बैठा हुआ शीघ्र ही वहां चला जाता है। मैं वहां चला जाता हूं। एक सैकण्ड नहीं लगता क्योंकि मुझे उस घर का पता लग गया है।

मारग विहंग बतावैं संत जन।
कौने घर से जिव की उत्पति, कौने घर को जावै।
कहां जाइ जिव प्रलय होइगा, सो सुर तहां चढ़ावै।

अब कहां प्रलय होगी ? जब दो अढ़ाई महीनों के बाद कभी अभ्यास बनता और शब्द को छोड़ जाता हूं तो वहां प्रलय है। जब वहां चला जाता हूं तो न मैं, न तू, न गुरु, न चेला, न राम न रहीम और न खुदा न करीम होता है अर्थात वहां कुछ भी नहीं होता।

गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सुई नखा से जावै।

समेरू, पर्वत का अर्थ हैं सबसे ऊंचा पहाड़ अर्थात जहां से जीव आया है वह सब से ऊंची अवस्था है। हमारा शरीर माँ के पेट में चौथे महीने बनता है और रूह मां के पेट में चौथे महीने आती है पहले नहीं आती। पहले जीवन बनता है। जीवन और चीज़ है और हस्ती और चीज़ है। यह बात मेरे अनुभव में आई है।

भू मंडल से परिचय कर ले, पर्बत धौल लखावै।

जब तक किसी को वैराग्य नहीं है और यह विश्वास नहीं है कि हमने यहां नहीं रहना है तब तक कोई आदमी वहां नहीं जा सकता चाहे जो इच्छा कर लेवे। अगर सच्चे जिज्ञासु को सत्संग से हकीकत का पता मिल जाये और उसके दिल में संसार की कोई इच्छा नहीं है तो वह सीधा ही विहंगम अर्थात पक्षी की तरह शरीर से निकलकर, मन को छोड़कर इस अवस्था में जा सकता है जहां वह शब्द के प्रकट होने से पैदा हुआ था। मगर वहां केवल वह जा सकता है जिसको अपने घर की तलाश हो। संसार की इच्छा रखने वाला मानव वहां नहीं जा सकता। उसके लिए और मार्ग है जिस आदमी को वैराग्य है और समझता कि मेरा यहां कुछ नहीं है केवल वही वहां जा सकता है, बिना वैराग्य के कोई वहां नहीं जा सकता। हम संसारी दुखों के कारण कि हमारी लकड़ी का विवाह हो जाये हमें बीमारी न आये और हमारा यह काम हो जाये हम ईश्वर, गुरु या राम को याद करते हैं। इस प्रकार याद करने वाला उस घर

नहीं पहुंच सकता। यह बिल्कुल ग़लत बात है। यह मेरा अपना अनुभव है। पुरुषोत्तम दास समझता है! जब तक इन्सान को संसार से वैराग्य नहीं है कि इस संसार में अपना कोई नहीं है चाहे वह लाख यत्न करे वह वहां नहीं पहुंच सकता। पहले भूमण्डल से परिचय करो इसका क्या भाव है ? भू जीवन को कहते हैं। पहले जीवन का अनुभव करो कि जीवन क्या है ? जब इसका अनुभव हो जायेगा तब आगे जाओगे। संतमत सर्व साधारण की चीज़ नहीं है। हम गुरुओं ने संसार को नाम देकर पागल बना दिया। जब तक वैराग्य नहीं है कोई अपने घर नहीं जा सकता। इसीलिए तो कहते हैं।

बिषयों से जो होए उदासा।
परमार्थ को जा मन आशा।
धन संतान प्रीत नहीं जाके।
खोजत फिरे साध गुरु जागे।

कौन आदमी है जिसे अपनी संतान से प्रीत नहीं है मुझे बताओ तो सही। आप सब बैठे हुये हैं। संसार की ओर देखो, कौन चाहता है कि मुझे धन

न मिले, संतान न मिले। अपनी संतान से कौन नहीं बन्धा हुआ है। लड़कों लड़कियों का विवाह करना है। यह सब बकवास है। हम गुरुओं ने केवल अपने नाम, मान प्रतिष्ठा और डेरों के लिए सबको नाम दिया है। सर्व साधारण के लिए वेद मार्ग है। अच्छा विचार रखो, अच्छा काम करो, एक दूसरे की सहायता करो, मां बाप की सेवा करो और परोपकार करो ताकि संसार का जीवन अच्छा हो जाये। जो असली घर जाना चाहते हैं वे नहीं जा सकते जैसा कि कबीर साहिब कहते हैं।

मारग विहंगम बतावै संतजन।
कौने घर से जिव की उत्पति, कौने घर को जावै।
कहां जाई प्रलय होइगा, सो सुर तहां चढ़ावै।
गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सुई नरवा से जावै।
भू मण्डल से परिचय करले, पर्वत धौल लखावै।

इसका क्या भाव है ? इसका कबीर साहिब को पता होगा जिन्होंने ये वाणियें रची है। मेरा सारा जीवन व्यतीत हो गया मुझपर तुम लोगो ने दया की है। यहां कोइ पैसा नहीं देता, मैंने जो बारह साल

कमाया सब कुछ दे दिया। मेरे बच्चे भूखे मरते रहे। मगर मैंने कोई परवाह नहीं की। आप लोग तो मांगने के लिए आते हो और हम देने के लिए जाते थे। केवल यह देखने के लिए कि वह राम का असली घर कहां और क्या है और जो बाणी सन्त कहते हैं। उसमें क्या असलियत है ? इसका पता मुझे केवल एक विचार से लगा कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता और इसी बात को पर्दे में रखकर इन गुरुओं ने हमें मूर्ख बनाकर लूटा है चाहे वह कोई भी हो। मैं गुरुओं को भी दोषी नहीं ठहराता क्योंकि हमलोग सच्चाई के लिए नहीं जाते हैं लेकिन मनानन्द के लिए जाते हैं। जो यह कहते हैं कि गुरु मरते समय लेजाता है वह बिल्कुल व्यर्थ झूठ धोखा फरेब है। हमें पर्दा में रखकर लूटा गया है लेकिन किसीने सच्चाई वर्णन नहीं की। इस प्रकार साफ कहने का दस्तूर नहीं था क्योंकि इससे लोग नहीं खिचते. डेरा नहीं बनता. पैसा नहीं आता और न ही मान मिलता है। इसलिए केवल वह इस मंजल तक पहुंच सकता है जिसे यह अनुभव हो जाये कि भूमण्डल और जीवन क्या है। मुझे दाता से यह भेद नहीं मिला। मैं सच्ची बात करता हूं। जिस

प्रकार दूसरे गुरुओं ने परदा रखा उसी प्रकार दाता दयाल ने भी परदा रखा। उन्होने लिखने में सफाई से काम किया मगर ज़बानी नहीं कहा। अगर स्पष्ट कह देते तो धाम में पैसा कहां से आता और वहां कौन आता। क्योंकि संसार वालों को इस चीज़ की आवश्यकता नहीं है। मुझे उस घर की आवश्यकता थी। मैं दाता दयाल को तंग किया करता था। उन्होंने काम देकर कहा था कि तुझे सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। आप लोग आजाते हैं। मैं आपको अपना गुरु समझता हू। मेने आप लोगों की दया से इस भेद और बाणी को समझा है।

मारग विहंगम बतावै संत जन।
कौने घर से जिव की उत्पति, कौने घर को जावं।

पहले मैं कुछ और समझता था। जब आप लोगों से पता लगा तो मैं मन के विचारों को छोड़ जाता हू। आगे शब्द और प्रकाश है। उसमें जो चेतनपना और हस्ती का भान होता है, वह जीव है। मैं वहां से आया हू और वहीं जाकर प्रलय हूंगा।

अगर उसे पता लग जावे तो जहां से वह आया है वहाँ सुरत चढ़ावे। हम लोग तो सुरत अपने

अन्तर भ्रूमध्य या मस्तिष्क के बीच ठहराते हैं और राधास्वामी, राधास्वामी राम, राम करते या बाबेफकीर का ध्यान करते हैं। बाबे फकीर का ध्यान करने से क्या तुम वहाँ पहुंच जाओगे ? बिल्कुल नहीं। यह झूठ और धोखा फरेब है। तुम्हारा मन तुम्हारे वश में होगा। बाबे फकीर या किसी सरगुण रूप का ध्यान करने से तुम्हारे संसार के काम बन जायेंगे, ऋद्धि सिद्धि आ जायेगी मगर तुम अपने घर नहीं जा सकते। सर्व साधारण गृहस्थियों को गुरु स्वरूप का ध्यान करना चाहिए। मेरा यह भाव नहीं कि मैं खण्डन करता हूं। आप लोग तो गृहस्थी हैं आपको वहाँ जाने की आवश्यकता नहीं इसलिये आपको ध्यान करना चाहिए मगर वे आदमी जो गुरु स्वरूप का ही ध्यान करते हैं अगर वे चाहें कि जहाँ से आये हैं वहाँ चले जायें तो यह ग़लत है। वे वहाँ नहीं जा सकते क्योंकि वे मन के मण्डल में हैं। जब तक तुम मन को नहीं छोड़ोगे वहाँ नहीं जा सकते।

गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सुई नरवा से जावै।

अगर आप अमल से नहीं समझ सकते तो बुद्धि से तो समझ सकते हो जो कुछ मैं कहता हूं। अमल से तब समझोगे जब साधन करोगे। सुई के नाके में जाना पड़ता है। सुई का नाका क्या है मुझे पता नहीं। क्या अन्तर कोई सुई है? नहीं। सुई का नाका यह है कि जब तुम सोने लगते हो तो तुम्हें पहले ग़नूदगी आती है, ऊंघ आती है। उस ऊंघ में कोई विचार नहीं होता। जाग्रत अवस्था भूल जाती है उसका नाम सुई का नाका या बंकनाल है। उस घर तक जाने के लिए क्या करना पड़ेगा? उस घर तक जाने के लिए तुम्हें शरीर मन और रंग रूप छोड़ने पड़ेंगे जब तुम यह सब छोड़ दोगे तो जिस प्रकार तुम जाग्रत से स्वप्न में जाते हो तो जाग्रत अवस्था को छोड़ जाते हो उस समय जो अवस्था होती है उसी प्रकार जब हम संसार और मन के विचारों को छोड़ जाते हैं तो हम ऐसी अवस्था से होकर जाते हैं जिसे सुई का नाका कहते है। मैं ऐसा समझता हूं मैं दावा नहीं करता कि जोकुछ मैं कहता हूं वही ठीक है जिस बात से मैंने समझा और मुझे तसल्ली हुई वह मैं कहता हूं।

दाता दयाल ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना मैंने बदल दिया । मगर मैंने शिक्षा को अपने अनुभव के आधार पर बदला है दूसरों के कहे-अनुसार नहीं बदला । मैं सारी आयु कानों में उंगलियां डाल डालकर सुई का नाका और बंकनाल ढूंडते-ढूंडते मर गया मगर कुछ नहीं मिला । सुई का नाका क्या हुआ ? सुई का नाका वही है जब हम शरीर को भूलकर आगे जाते हैं तो ग़नूदगी आती है । पता नहीं लगता कि हम कहां हैं फिर आगे की चेतनता आती है । उस दरम्यानी हालत को मैंने नाका समझा है । मगर यह किसे आयेगा और आदमी कब जायेगा ? जब उसे भूमण्डल से परिचय होगा । जिसे संसार से बैराग्य नहीं और इस संसार को सत मानता है उसका तो बाप भी वहाँ नहीं जा सकता । गृहस्थियों को इस बात से क्या मतलब, उन्हें तो संसार चाहिये । यह नाम केवल उनके लिये है जिन्हें संसार का अनुभव हो चुका है और जिन्होंने यह जान लिया है कि इस संसार में कोई भी अपना नहीं है एक दिन अवश्य संसार को छोड़ जाना है । दूसरे आदमी इस ओर नहीं आते ।

यह इन्दौर वाली माई यहां आई हुई है यह घर से निराश होकर आई है लेकिन फिर भी लड़कियां इसका पीछा नहीं छोड़ती। जब ये आती है तो इसके दिल में मोह पैदा होता है। मोह का पैदा होना प्राकृतिक बात है यह किसी के वश में नहीं है। बेशक लड़कियां दामाद आयें लेकिन मोह पैदा न हो। जैसे और आदमी मिलते है वैसे वे मिलें फिर ठीक है। माँ! समझती है कि मैं क्या कह रहा हूं? मैं अपनी जिम्मेदारी महसूस करता हू यह यहां इसलिए आई है कि अगर बाबे के पास मरूंगी तो मुक्त हो जाऊंगी। तुम्हें तब तक मुक्ति नहीं मिल सकती जब तक तुम्हारा संसार से अर्थात सम्बन्यिों, धन धान्य, गुरु की देह, आश्रम से प्रेम है इसीलिए सनातन धर्म वालों ने सन्यास रखा है। लेकिन अब वह पिछला जमाना गया अब तो केवल मन से ही सन्यास लेना पड़गा। संसार में अपने बाल बच्चों के साथ रहो लेकिन किसी को दिल मत दो, मन को पलट दो, अधिक परिश्रम और तप करने की आवश्यकता नहीं है।

भू मंडल से परिचय कर ले, पर्वत धौल लखावै।

जब ऊपर चढ़ जाओगे तो आगे क्या होगा ? धौल पर्वत, धौल पर्वत पर बारह महीने सफेदी रहती है। धौलगिर पर्वत बिल्कुल सफेद होता है। जब मन को छोड़कर सूई के नाके से जाओगे तो तुम्हारे आगे प्रकाश का पहाड़ अर्थात प्रकाश ही प्रकाश आयेगा वह प्रकाश ही ब्रह्म है। उन्होंने तो धौल पर्वत कह दिया। मैं भी सारा जीवन पहाड़ देखता-देखता मर गया लेकिन वहां कोई पहाड़ नहीं है। जब मानव बंकनाल से जाकर शरीर को भूल जाता है तो आगे क्या आता है ? प्रकाश, नूर, नूर, नूर। इसका यह भाव है जो मैंने समझा है।

द्वादस कोस साहिब कै डेरा, तहां सुरत ठहरावै।

द्वादस कोस का क्या भाव है, क्या वहाँ बारह कोस हैं ? यह वर्णन शैली है शरीर के छः चक्कर, मन के छः चक्कर, गुदा, इन्द्री, नाभी, हृदय, कण्ठ और तीसरा तिल। इसी प्रकार मन के छः चक्कर हैं। इससे आगे क्या है ? इससे आगे सतलोक प्रकाश है धौलगिर है, प्रकाश ही प्रकाश का समुन्द्र है। मैं आप लोगों की दया से सुखी हूं। कैसे ? जब तुम

लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर जाता है लेकिन मैं नहीं जाता तो मेरी आँख खुल गई। इसी एक बात को परदे में रखकर ये धर्म और पंथ बन गये और हम गरीब आदमी लुट गये। कोई देवी, कोई आगरे, कोई आनन्दपुर, कोई मक्के मदीने और कोई कहीं दौड़ा जाता है। वहाँ क्या रखा है। अपना ही विचार विश्वास और श्रद्धा है। कहीं कुछ नहीं है जो कुछ है तुम्हारे अपने अन्तर है। सुमिरन से शरीर के छः चक्कर भूल जाता हूं। वह कहते हैं "वहंगम" जब सत्संग मिल जाता है और बात समझ में आ जाती है तो मानव सीधा ही वहंगम मार्ग से ऊपर चला जाये अधिक अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं। अब मैं ऊंचा चला गया हूं। मैंने मन की बहुत सैर की है।

द्वादस कोस साहिब कै डेरा, तहां सुरत ठहरावै।
वा को रंग रूप नहीं रेखा, कौन पुरुष गुन गावै।

कबीर साहिब ने क्या कहा है। वह इशारा कर गये, इसे कौन समझे। जब तुम सुई नखा से जाओगे जैसे मैं कहा करता हूं कि अन्तर प्रकाश को देखने

ग्रौर शब्द को सुनने वाली कौन चीज़ है उसका पता नहीं लगता। जो चीज़ प्रकाश को देखती ग्रौर शब्द को सुनती है वह और चीज़ है और प्रकाश ग्रौर शब्द ग्रौर चीज़ हैं। तुम शब्द को सुनते हो तुम ग्रौर हो। वह जो चीज़ "तुम ग्रौर हो" उसका मुझे ग्रन्त नहीं मिला। कबीर साहिब कहते हैं वह हमारा आदघर है। उसमें न रूप न रंग ग्रौर न रेखा है। जब मैं वहाँ ग्रकेला हो जाता हूं तो वहाँ न खुदा है, न ईश्वर का विचार रहता है, न वहाँ गुरु रहता है और न वहाँ चेले का विचार रहता है फिर किसके गुण गाऊं ग्रौर किसके ग्रागे सजदा करूं? इसका मैंने क्या भाव समझा? पुत्रो! मैंने प्रण किया था कि ग्रपना अनुभव कह जाऊंगा। तुम मेरे भाई, बहनें ग्रौर माताएं हो! मैं किसी बात का दावा नहीं करता मेरी सारी ग्रायु सच्चाई की खोज में व्यतीत हो गई। मैंने जो समझा वह कह दिया! जब मैं दो महीनों के बाद वहाँ जाता हूं तो न वहाँ 'मैं' न खुदा, न लेना न देना, न मैं पहले था ग्रौर न पीछे रहूंगा लेकिन मैं प्रकाश और शब्द को नहीं छोड़ सकता। तभी तो मैंने समझा कि मैं कौन हूं। मैं एक चेतन

का बुलबुला हूं। अगर मैं वहाँ पहुच कर कुछ कर सकता होता तो मान लेता कि मुझे में कुछ शक्ति आ गई है। मैं तो क्या, कोई भी कुछ कर सकता होता। अगर पिछले सन्त कुछ कर सकते होते तो अपने लिए ही कुछ कर लेते। उन्होने क्या कर लिया मुझे शान्ति कहां मिली ? मैं कौन हू। मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। वह एक तत्व है। मेरे दिल में भ्रम और अज्ञान था जिससे मैं ढूंडता फिरता था। अब किसी चीज़ की खोज नहीं है। उसने एक चेतन का बुलबुला बनाया है जब उसकी इच्छा होगी टूट जायेगा, न मैं पहले था और न पीछे रहूंगा। मेरी 'मैं' चली गई मेरी समझ में यह बात आई है। हो सकता है कि मैंने ग़लती की हो या ठीक किया हो। मैं चाहता हूं कि अगर मैं ग़लती पर हूं तो कोई तो महात्मा मेरे विरुद्ध बोले। आज मुझे काम करते हुये अठतीस साल हो गये किसी आदमी ने मेरे विरुद्ध कलम नहीं उठाई दो शब्द भी नहीं कहे। पलेट फार्म पर तो किसी ने नहीं कहा लेकिन अन्तर मन में चाहे गालिएं ही देते हों या कहते हों कि बाबे का सत्संग न सुना करो वह

हुक्का पीता है क्योंकि मेरे सत्संग से उनकी हानि होती है।

कहें कबीर सुनो भाई साधो, जो यह पद लखि पावै।
अमर लोक में झुलै हिंडौलो सत्गुरु शब्द सुनावे।

अगर कहते हैं जो चीज़ सदा रहती है। हम अभ्यास करते हैं जितने रूप बनते हैं वे सदा नहीं रहते मगर उन रूपों को देखने वाला सदा रहता है। हम प्रकाश देखते हैं प्रकाश भी समाप्त हो जाता है मगर देखने वाला रहता है। फिर अजर अमर कौन हुआ ? हमारी ज़ात अजर अमर है। अपने अमरपने में रह कर आदमी एक अवस्था में रहता है। उसे वर्णन नहीं कर सकता। अब बेवसी की दशा में काम करता हूं लेकिन दिल नहीं चाहता। मेरी समझ में बात आ गई, शन्ति मिल गई।

हंसा ! छोड़ो कर्म की आसा।
कर्म काल सब जगत नचावे, फिर फिर करै गिरासा।
उपजन बिनशन कर्महि कहिये, कर्महि जगत बिनासा।
कर्महि काल व्याल पुन कर्महि, कर्महि की सब त्रासा।
जप तप कर्म बांध जग राखै पाप पुन्य विश्वासा।
कर्म ही देवल तीरथ कहिये, कर्महि अलह उदासा।

कर्महि जोग ध्यान तप पूजा, कर्म चढ़ावैं दासा।
कर्महि दुख सुख जड़ चेतन है, तीन लोक परकासा।
कर्महि देई लेन पुन कर्महि, यज्ञ दान रहै बासा।
प्रतिमा भूत कर्म के बस हैं, चार विचार निवासा।
कर्म दुखी दरिद्री कहिये, कर्महि भोग विलासा।
कर्म विकार राह तज बैठो, कहैं कबीर सुख रासा।

ज़मीन घूम रही है। क्या आपको पता लगता है? ज़मीन हर समय घूमती है तब आपको पता लगता है जब सूर्य चढ़ता या डूबता है। हमारे शरीर के अन्तर खाना हज़म होता है, जिगर फेफड़े काम करते हैं क्या आपको पता होता है? नहीं। इसी प्रकार सारा संसार काम करता है जैसे कबीर साहिब कहते हैं कि कर्म की आशा छोड़ दो। यह कबीर साहिब को पता होगा कि उन का क्या भाव है। मैं कर्म की आशा छोड़ने का भाव यह समझता हूं कि जो कुछ हो रहा है वह तो होना ही है, तुम चिन्ता न करो और इसके पीछे न पड़ो। कर्म हर समय चलता रहेगा इसे कोई नहीं रोक सकता लेकिन हम अपने आपको उसमें न फंसाये।

हंसा छोड़ो कर्म की आशा।
कर्म काल सब जगत नचावे, फिर फिर करै गिरासा।

कर्म का अर्थ समझते हो। कर्म का अर्थ गति करना है। यहां हर चीज गति में है जैसे सूर्य, चांद, सितारे, लोक लोकान्तर और हमारे शरीर में हर चीज गति में है। हर स्थान पर गति है। अब इसको छोड़ो का क्या अर्थ है? गति तो रहेगी। छोड़ो का भाव यह है कि कोई परवाह न करो। जो कुछ होना है वह होना ही है किसी के वश की बात नहीं है। यह कबीर साहिब का भाव है जहां तक मैं समझता हूं। अगर कबीर साहिब का और भाव है तो वह जानें।

उपजन बिनशन कर्महि कहिये, कर्महि जगत बिनासा।
कर्महि काल व्याल पुन कर्महि, कर्महि की सब त्रासा।
जप तप कर्म बांध जग राखै, पाप पुन्य विश्वासा।
कर्महि देवल तीरथ कहिये, कर्महि अलह उदासा।

मैं स्वयं सोचता हूं कि कबीर साहिब का क्या भाव है मैं कोई दावा करता हूं कि जो कुछ कबीर कहता है वही मेरा भाव है। यह बात नहीं है। मैंने अपना जीवन व्यतीत कर दिया। मैंने यही समझा कि जो कुछ संसार में हो रहा है, हो रहा है, तुम अपनी

आशा छोड़ दो। अपने निजी स्वार्थ के लिए चिन्ता मत करो। मैंने ऐसा समझा है। कबीर का क्या भाव है यह वह जानें। हमारे साथ कर्म तो रहेगा ही। संसार गति में है। जब तक जीवन है हमारा शरीर गति में है। जब हम सो जाते हैं तो भी शरीर काम करता है। नाडिएं चलती हैं, खून चलता है नबज़ धक-धक चलती रहती है। इसका भाव यह है कि संसार में आकर अपनी इच्छा के लिए कोई काम न करना अर्थात इच्छा रहित होना, तभी आदमी उस जगह पहुंच सकता है। अगर कोई वासना है तो नहीं पहुंच सकता।

कर्महि जोग ध्यान तप पूजा, कर्म चढ़ावै दासा।
कर्महि दुख सुख जड़ चेतन है, तीन लोक परकासा।

मैंने इसको साफ कर दिया। मैं बिहंगम चाल के अतिरिक्त कोई साधन नहीं करता। जब अभ्यास में बैठता हूं तो सुरत को वहां लेजाता हूं। अब क्या करु मुझे हकीकत का पता लग-गया कि यह सारा काम काल कर्म का चक्र था।

कर्महि देई लेई पुन कर्महि, यज्ञ दान रहै बासा।
प्रतिमा भूत कर्म के बस है, चार विचार निवासा।

पुरुषोत्तमदास ! मैं आप सोचता हूं कि कर्म को कैसे छोड़ूं जब यहां हर चीज़ गति में है तो कर्म तो होता रहता है। केवल अपनी ज़ात के लिए किसी चीज़ की इच्छा न रखना ही कर्म को छोड़ना है अर्थात अपने निजी स्वार्थ के लिए इच्छा न रखना, किसी वासना में न फंसना, कोई यत्न न करना ही कर्म का छोड़ना है। मैंने यह समझा है। मैं सारा जीवन इन वाणियों को पढ़ पढ़ कर पाग़ल हो गया मुझे दाता ने गुरु बनाकर मुझ पर दया कर दी। तुम लोगों के इस एक विचार ने कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता मेरे जीवन का तख्ता पलट दिया। मुझे शान्ति मिल गई। मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हारे अन्तर तुम्हारा अपना ही मन मुझे बनाता है, मैं तो जाता नहीं। मेरे अन्तर जो कुछ फुरना फुरती है वह मेरा मन ही बनाता था और अब मैं मन को छोड़ गया हूं। मन है, मन फुरता है और मैं अब मन से ही बात कर रहा हूं मगर इसमें फंसता नहीं। इतनी ही बात है और कुछ नहीं। नौ बार हल चलाकर एक बार सुहागा देदो। सुहागा फेरना क्या है ? यह समझ

आ गई कि जितना खेल है यह सारे का सारा समाप्त हो जाता है। मुझ पर यह दया तुम लोगों ने की। मेरे पास आप लोगों को देने के लिए कुछ नहीं है वरना अवश्य देता। जितनी मंदिर में आप लोगों की सेवा हो सकती है वह करता है।

कर्म दुखी दारिद्री कहिये. कर्महि भोग विलासा।
कर्म विकार राह तज बैठो, कहैं कबीर सुख रासा।

कर्म को छोड़ दो! तुम कर्म को तभी छोड़ोगे जब तुम अपने निजी स्वार्थ को छोड़ दोगे वरना आप तो क्या, किसी से भी कर्म नहीं छूटता। अगर तुम अपने स्वार्थ के लिए काम नहीं करोगे तो वह तुम्हें दुख दायक नहीं होगा जितना झगड़ा है यह अपनी 'मैं' अपने स्वार्थ का है अगर मैं इस विचार से सत्संग कराता हूं कि मेरी मान प्रतिष्ठा हो, मुझे धन मिले तो में कर्म की फांस में हूं। तुम लोग आते हो, तुम्हारी इच्छा करे आया करो न करे मत आया करो।

कर्म विकार राह तज बैठो, कहैं कबीर सुखरासा।

वह कहते हैं कि 'विकार कर्म को राह को छोड़ बैठो' तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा।

विकार कर्म क्या हुआ ? अपने स्वार्थ, आराम, सुख के लिये जो हम कर्म करते हैं वे दुख का कारण बन जाते हैं। अपने लिए न जीओ दूसरों के लिए जिओ। यही दाता दयाल ने मुझे लिखा था कि फकीर ! अपने लिए न जी (जिवित रह) दूसरे के लिए जी फिर कोई बात नहीं है। मैं सत्संग कराता हूं, अपने लिए नहीं कराता लेकिन आप लोगों के लिए कराता हूं मुझे इसका कोई बन्धन नहीं है। अगर मैं अपने लिए कराऊं कि मुझे धन आ जाये, मेरी मान प्रतिष्ठा हो जाये, मेरी बड़ी प्रभुता हो जाये तो मैं फंस गया।

आप लोग आ जाते हैं। अब मैं जीवन में सफर करता करता थक गया हूं। जिस प्रकार मानव किसी चीज को ढूंडता थक जाता है जब वह मिल जाती है तो वह शान्त हो जाता है। पिछले जो प्रालब्ध कर्म हैं वे काटने हैं इसका पता नहीं कि एक या दो साल शेष हैं। मेरे पास शुभ भावनायें हैं। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि तुम्हें स्वस्थ्य, खाने को रोटी और मन को शान्ति मिले तुम्हें मुक्ति की तो आवश्यकता नहीं। शेष विशेष-

बिशेष आदमी हैं जो इस मार्ग पर चलने वाले हैं। सर्वसाधारण इस मार्ग पर चलने वाले नहीं हैं। यह तो सन्तो ने अपने डेरों, मान प्रतिष्ठा के लिए लोगों को नाम दिया है।

सब को राधास्वामी

सत्संग परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक १६-६-७८

राधास्वामी।

मैं यह काम करता हूं। मैं महसूस करता हूं कि यह काम क्यों करता हूं? हर आदमी को कोई न कोई खबत है, मोनिया है। कोई धन, कोई स्त्री, कोई मान और कोई और किसी इच्छा में फिरता है। मुझे होश आई। मैं हिन्दु था। मुझे भगवान को मिलने का विचार पैदा हुआ। मैं ब्रह्मण के घर पैदा हुआ। मैं सनातन धर्म को मानता था। मैं राम, कृष्ण, देवी देवता को पूजता और मत्था टेकता था जैसा कि मैं पहले भी कहा करता हूं। मेरा भाग्य मुझे संतमत में लेआया। जब मैंने संतों, कबीर साहिब, राधा स्वामीमत की बानियें पढ़ीं तो उनमें उस भगवान को जिसको हम पूजते हैं, काल कहा है

संतमत में संसार के पैदा करने वाले को काल, जालम और निर्दई कहते हैं। वे उस इश्वर परमात्मा को नहीं पूजते जिसने संसार बनाया है। दाता दयाल जी महाराज से मेरा विश्वास नहीं टूटता था और न ही मुझे यह समझ आती थी कि संतों का खुदा कौन सा है। मैंने इस बात को समझने के लिए सारा जीवन व्यतीत कर दिया कि क्या इस संसार को बनानेवाला ठीक जालम है? क्या इससे परे कोई और मालिक है जहां हम जायें? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा, दाता दयाल ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तुम्हें विश्वास है कि इस संसार को पैदा करने वाला जालम है? हां! विश्वास है।

कैसे विश्वास आया? यह बाग़ लगा हुआ है। इसमें वृक्ष लगे हुये हैं। वृक्षों पर टहनिओं को पत्ते लगे हुये हैं। पत्तों को कीड़े खाते हैं। क्या पत्तों में जान है या कि नहीं? विज्ञान सिद्ध करता है कि इन पत्तों में जान है। एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाता है, दूसरा तीसरे को खाता है। पक्षी कीड़ों को खाते हैं।

पक्षियों को कोई और चीज़ खाती है। जानवरों को शेर, भेड़िए, चीते खाते हैं। मैं सोचता हूं, छोटे-छोटे कीड़े मरते हैं एक दुसरे को खाते है। हमारे शरीर के अन्तर करोड़ों कीड़े (Germs पलते हैं। अन्तर ही बच्चे पैदा करते हैं। जब कीड़े (Germs) अधिक बढ़ जाते हैं तो दूसरे (Germs) उनको खाते हैं। मलेरिया के जर्मज़ (Germs) होते हैं। हम दवाई देकर उन्हें मारते हैं। शास्त्र कहते हैं कि ईश्वर ने हमें अपने रूप पर बनाया है। संतों की शिक्षा अनुसार जो असली मालिक है, उसने संसार को पैदा नहीं किया। काल ने पैदा किया है यह तो मुझे विश्वास हो गया। हम कितना जुलम करते हैं। हम अपने स्वाद के लिए बच्चे पैदा करते हैं जो बच्चे पैदा होंगे उनके साथ क्या होगा, उनको टी-बी होगी, कैंसर होगा, या क्या होगा, क्या किसी को पता है ? यह असाड़ महीना है। वहां लिखा हुआ है :—

प्रथम असाढ़ मास जग छाया।
आसा धर जिव गर्भ समाया।

छोटे बच्चों को बीमारी कुछ होती है और माँ बाप कुछ और इलाज करते हैं। बच्चा न बोल

सकता है और न कह सकता है फिर भी बीमार होता है। उसे टीके लगते हैं और वह रोता है। फिर वह बच्चा खेलना चाहता है लेकिन माँ बाप उसे बल पूर्वक पढ़ाना चाहते हैं। अगर वह उनके कहे नहीं लगता तो माता उसे मारती है। जब बड़ा हो जाता है तो उसके मन में तरंगें उठती हैं, जवानी आती है और कई खराबियें करता है। विवाह होने पर स्त्री के साथ आनन्द लेता है। बच्चे पैदा करता है। लड़के लड़किएं हो जाती हैं। फिर उनके विवाह करो। मेरे पास ऐसे कई केस *Case* हैं। मैं भी तुम्हारे जैसा गृहस्थी हूं। लड़कियों के लिए घर नहीं मिलते। लड़के लड़किऐं बदमाश हो जाती हैं। हम भी दुखी होते हैं। यह संसार क्या है ? हमपर ऐसा माया का छापा पड़ा हुआ है कि हम दुखी भी होते हैं, रोते भी हैं, पीटते भी हैं लेकिन फिर भी इस संसार को छोड़ने के लिए तैयार नहीं। स्त्री काम के वश में हमें जूते भी मारती है, बुरा वर्ताव भी करती है लेकिन फिर भी हम उसके पीछे पीछे फिरते हैं। पती अपनी स्त्री को तंग करता है, कई कष्ट देता है फिर भी स्त्री उसके पीछे फिरती है। यह संसार

क्या है ? यह काल और माया का संसार है मगर इसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। मैंने ध्यान दिया और सोचा।

संतों ने इससे बचने की युक्ति बताई ताकि हम सदा के लिए इस झगड़े से बच जायें। संतों का मार्ग केवल इस संसार के दुखों से बचने के लिए है। यह संतमत न समाजवाद है और न राजनीति है। कई बार मैं चकित होता हूं कि जिन संतों ने यह इलाज निकाला है वे बहुत दुखी हुये। बड़े बड़े संत बीमार हुये। कोई टी-बी कोई कैंसर से मरा। किसी के साथ मुकद्दमा हुआ। यह संसार दुखों की खान है। क्योंकि मुझे यह विचार मिला था कि मालिक एक ऐसी जगह है जहाँ से हम फिर नहीं आयेंगे और हमारे दुखों की समाप्ती हो जायेगी। पता नहीं जिन संतों ने यह शिक्षा निकाली है वे आवागवन से बचे या कि नहीं। इसका हमारे पास कोई प्रमाण नहीं। सुनी सुनाई बातें कहते हैं। कई बड़े बड़े संत कहते हैं कि भई ! मैं फिर आऊंगा। अगर भई, आपने संत बनकर फिर आना है तो जो कुछ आपने संसार को बताया वह ग़लत है। इसी समझ को प्राप्त करने

में मेरा जीवन समाप्त हो गया। अब मैं बानवे साल का हो गया मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। संतों ने अपनी बाणियों में काल के निर्दयी होने के बारे कहा है।

मैं हर समय अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द ! तूने यह मकड़ी का जाला बना लिया। लोगों को उपदेश करता है, पहले तू बता कि तेरे पास कोई प्रमाण है कि क्या तू वापिस फिर इस चक्कर में नहीं आयेगा या अभ्यास करने या नाम जपने से तू स्वयं दुखों से बच गया ? क्या मेरे पेट में दर्द नहीं होती ? किसी समय पेशाब का कष्ट है किसी समय कोई कष्ट है। मैं सोचता हूं कि यह संसार क्या है ? क्या इससे बचने की कोई युक्ति है ? वह युक्ति मुझे दाता दयाल समझाते थे मगर मेरी समझ में नहीं आती थी। मुझे उस युक्ति का पता तुम लोगों से लगा। कैसे ? सत्संगी लोग कहते हैं कि मेरा रूप उनकी सहायता करता है। मगर मैं नहीं होता और न ही कहीं जाता हूं न मुझे पता है यह बिल्कुल सच्ची बात है जो कुछ मैं कहता हूं। अगर इसी प्रकार दूसरे गुरु भी नहीं जाते न सहायता

करते हैं तो मैं उत्साहपूर्वक कहता हूं कि इन संतों, धर्मों और पंथों ने अपने निजी स्वार्थ के लिए मानव जाति के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया और धोखा दिया है। क्योंकि हमें पता है, बाणा कहती है गुरु के पास जाओ, वह तुम्हें पता देगा। जो कुछ तुम्हारे साथ होता है यह सब बकवास है, झूठ है। जीवों को ग़लत विचार दिये गये हैं, ग़लत समझ दी गई है। एक संत जी को जब लोग तंग किया करते थे तो उन्हें क्रोध आता था और वह सत्संगियों को सोठी से मारा करते थे। सत्संगी समझते थे कि उनके पाप कट गये। क्योंकि मेरे ज़िम्मे शिक्षा को बदलने की आज्ञा थी इसीलिए मैंने सच्चाई वर्णन कर दी।

मैं टांडे गया था। वहां डाक्टर जगजीत सिंह जो Finance Minister था, उसने मुझे सत्संग के लिए बुलाया था मेरी फोटो के साथ इश्तिहार भी दिया। उसने मुझे क्यों बुलाया? केवल इस लिए कि वह यहां से लन्दन गया था और वहां से उसने मुझे लिखा था कि मैं लन्दन में प्रात: साढ़े चार बजे उसके कमरे में चला गया और मैंने उसे बहुत कुछ कहा और यह भी कहा कि बैसाखी आ रही है, तुमने कुछ सहायता

नहीं की । उसने अपनी स्त्री को लिखा और वह यहाँ आकर रुपये दे गई । फिर वह कैनेडा में था । बहुत ठण्ड पड़ रही थी । वह हैलीकौपटर में जा रहा था कि बर्फानी तूफान में घिर गया, कोई ठिकाना न रहा । वह कहता है कि रौशनी के मण्डल में (फकीर-चन्द) प्रकट हुआ । मेरे साथ बातें की और फिर मैं उसे Read Indians के पास ले गया । मैंने उसे कहा कि दो घण्टे यहां ठहरो फिर दूसरा जहाज़ आयेगा वह ले जायेगा जैसा कि उसने वैसाखी के सत्संग में भी कहा था । मैं तो गया नहीं । फिर क्या सिद्ध हुआ ? कि अगर यह ठीक है कि ये महात्मा भी नहीं जाते और हमें परदे में रखकर मूर्ख बनाया और लूटा है तो ऐ भारत वर्ष के धार्मिक और पंथिक संसार वालो ! तुम सोच लो कि ये कहां तक सच्चे हैं इसलिए मैं राधास्वामीमत, कबीर मत या संतों के मत को सच्चा मानने के लिए विवश हो गया । अगर आज मुझे यह सच्चाई न मिलती तो शायद मैं पहला आदमी होता जो कबीरमत, राधास्वामी मत या नानकमत के विरुद्ध आवाज़ दे जाता चाहे लोग मुझे कुछ भी कहते । मैं कभी न डरता । यह

वह भेद है जिसे कबीर ने भी छुपाया। उसने धर्म दास को भेद बताकर कह दिया।

धर्मदास तोहे लाख दुहाई।
सार भेद नहीं बाहर जाई।

मगर मैं सोचता हूं कि अगर तूने इस भेद को खोल दिया तो क्या बन गया ? क्या लोग सुधर गये ? नहीं। लोग मुझे अपने घर ले जाते हैं। जालन्धर के एक आदमी के लड़के का विवाह था वह कहता था मेरे घर चलो। मैं हंसा, मैंने कहा, फकीरों का क्या काम। हम लोग तो इस संसार के पैदा करने वाले को ज़ालम समझते हैं और अगर हम विवाहों में जाते हैं तो हम दोषी हैं। जो कुछ हम शिक्षा देते हैं उसके हम विरुद्ध जाते हैं।

मेरी पिछली आयु है। पता नहीं मेरे साथ क्या हो। मैंने जो कुछ समझा, वह कहता हूं। स्वामी जी कहते हैं :—

काल ने जगत अजब भरमाया।

काल Creator को कहते हैं। जिसने संसार बनाया है और रचा है। संत इस संसार के रचने

वाले की पूजा नहीं करते बल्कि स्वामी जी ने यहां तक लिख दिया कि संत ईश्वर और परमेश्वर के पैदा करने वाले होते हैं। ऐसी ऐसी बाणियें सुनकर हम लोग संतों के पीछे फिरते हैं। मैं बहुत फिरा हूं। आपने क्या फिरना है, आप तो मेरे पास मांगने के लिए आते हो, मैं सब कुछ देने के लिए जाया करता था। केवल यह जानने के लिए कि सच्चाई क्या है और वह असली मालिक कहां है जिस से मिलकर हम सदा के लिए इस काल के चक्कर से बच जायें। काल के चक्कर से बचने का क्या भाव है? हमारा मन काल है। यही वासना, इच्छा, आस और रचना करता है। इच्छा के बिना न तो तुम रह सकते हो और न मैं रह सकता हूं, न संत रह सकते हैं। अगर संतों ने डेरे बनाये तो वे भी काल में ही हैं मैंने मानवता मंदिर बनाया, यह कालमत नहीं तो क्या यह दयालमत है? इस संसार में रहते हुये इस चक्कर से बचना महा कठिन है। अगर हम बचना भी चाहें तो दूसरे नहीं बचने देते। मेरी लड़की के कोई बच्चा नहीं। जब कभी वह आती है तो मैं कहा करता हूं बेटी! तू बड़ी भाग्यशाली है, पाप करने से बच गई।

अगर बच्चा पैदा करेगी तो पता नहीं उसके साथ क्या होगा ? मगर वह दुखी है। संतों का मार्ग सर्व-साधारण के लिए नहीं है जिन्हें संतान चाहिए और झगड़े में पड़ना चाहते हैं उनके लिए न संतों का मार्ग है और न कभी होगा। हम गुरु लोग सारे संसार को संतमत की शिक्षा देते हैं लेकिन असल में हम स्वयं कालमत में चलते है और लोगों को यह बताते हैं कि हम दयालमत के पैरोकार हैं।

काल ने जगत अजब भरमाया।
मैं क्या-क्या करूं वखान।

यह स्वामी जी की बाणी है। क्या इसमें झूठ लिखा है ? बिल्कुल ठीक है। काल हमारा मन Creator है। हम अपने संकल्प से अपना संसार बनाते हैं। ईश्वर अपने संकल्प से संसार को बनाता है। हम सब भ्रम में हैं। आज तुम्हारे अन्तर मेरा रूप, राम कृष्ण या किसी और का रूप प्रकट हो गया, आपने इसे सच समझा। फिर आप फकीर चन्द या किसी और के पास गये जिस का रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट हुआ। उसे रुपये दिये और नाक रगड़े

यह जानकर कि गुरु महाराज मेरा अमुक काम कर गये। टांडे में एक स्त्री आई, जिसके हाथ में सौ रुपये का नोट था। उसने मेरी गोद में बच्चा डालकर कहा कि बाबा जी! यह आपका प्रशाद है। मेरे कोई लड़का नहीं था। आपके पास गई थी, आपने प्रशाद दिया था। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं अरे बूढ़े! मर जायेगा क्या किसीने तेरे साथ जाना है? क्या तेरे प्रशाद से बच्चा हुआ? अगर मेरे प्रसाद से बच्चा हो सकता है तो मेरी लड़की के भी हो सकता है। स्वामी जी ठीक कहते हैं कि इस मन ने हमें भरमाया हुआ है। बात कुछ और है और हम समझते कुछ हैं। इसका क्या परिणाम होता है? हमें खुशी भी मिलती है और दुख सुख भी मिलता है।

यह काम जो मैं कर रहा हूं आपपर कोई उपकार नहीं करता। यह मेरा अपना कर्म भोग है। इस काल ने मुझे भी बुरी तरह भरमाया हुआ है। जितने आदमी मेरे पास आते हैं क्या कोई परमार्थ की बात करता है? कोई कहता है घाटा पड़ा हुआ है, किसी की लड़की का विवाह नहीं होता, कोई पूछता है B.S.C. कराउं या M S.C. यही कबीर साहिब ने नीचे

शब्द में कहा है। मैं जानता हूं कि मैं ऊंचा बोल रहा हू। आपलोग मेरी बात को सुनना पसन्द नहीं करोगे क्योंकि आपको आपके मन ने भरमाया हुआ है। तुम्हें सच्चाई को ओर नहीं जाने देता। कई बीमार आदमी मुझसे प्रशाद ले जाते हैं वे स्वस्थ हो जाते हैं वे समझते है कि उन्हें बाबे ने स्वस्थ किया। अगर मैं स्वस्थ करने वाला होता तो मैं डाक्टरों के पास क्यों जाता। ऐसी दशा को देखकर मेरा मस्तिष्क Puzzle होगया। मैं किसी ऐसी जगह जाना चाहता हूं जहां फिर जन्म न हो और वापिस न आऊं। अब विचार आता है कि फिर जन्म होगा तो जान काँपती है। दस महीने किसीके पेट में सिर नीचे और टांगें उपर रहेंगी फिर जिस प्रकार मेरा बाप कठोर हृदय था, मुझे मारता था, वैसा और कोई बाप मिल जायेगा जो मुझे मारेगा। स्त्री ऐसी मिलेगी जो मेरी जान खायेगी। यह संसार क्या है ? कुछ नहीं, विपत्ति का कारण है।

ऐसी दिवानी दुनियां. भक्ति भाव नहिं भूझे जी।
कोई आवे तो बेटा मांगे, यही गुसाई दीजै जी।
कोई आवे दुख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी।

कोई आवे दौलत मांगे, भेंट रुपया लीजे जी।
कोई करावे व्याह सगाई, सुनत गुसाई रीझे जी।
सांचे का कोई गाहक नाहीं, झूठे जक्त पतीजै जी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अंधों को क्या जीजै जी।

एक फिरका वाले कहते हैं माँस खाओ और शराब पिओ, बेशक दूसरों की स्त्रियों को लिए फिरो। उनके करोड़हा आदमी चेले हैं। उनके पास इतना रुपया आता है जिसका कोई हिसाब नहीं। सच्चे आदमी को कोई नहीं पूछता कि तू कौन है। यह काल की रचना है। तभी तो कबीर साहिब कहते है।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अधों को क्या कीजै जो।

मैं समय का संत सत्गुरु हूं। आज सन्तमत की शिक्षा दे रहा हूं कि इस संसार में दुख है। हमारे प्रधान मेरे मित्र सेठ दुर्गादास जी का चोला छूट गया। वह १९१७ से मेरे मित्र थे। आज ६१ साल तक मेरी उनकी मित्रता रही। उसने बाइस हजार रुपया मंदिर बनाने के लिए दिया था। मेरे अपने घरेलु खर्च के लिए चालीस रुपये और मंदिर के लिए बीस रुपये देता था। अब वह मर गया। लोग कहते हैं

कि अन्त समय पर गुरु ले जाता है। इसी भ्रम में आकर लोग नाम लेते हैं। ऐसा पाखण्ड, धोखा और फरेब है जिसका कोई हिसाब नहीं। मुझे पता नहीं कि वह कब मरा। मेरा इतना प्रेमी था कि मुझे उसके मरने का पता तक न लगा और न यह पता लगा कि वह कहां गया। लोग मरते समय कहते हैं कि बाबा घोड़ा, पालकी या हवाई जहाज़ लेकर आया। यह काल तुम्हारा मन है यह मन ही तुम्हारा रक्षक और भक्षक है। हमें ऐसा कहने वालों ने बहुत धोखा दिया है। मैं सतपुरष हूं निर्भय होकर कहता हू और सच्चाई वर्णन करता हूं जो संतों ने की है तुम लोग गुरु धारण करते हो और समझते हो कि वह तुम्हारा बेड़ा पार कर देगा। यह बिल्कुल झूठ है। तुम्हारा बेड़ा गुरु की बात को समझ कर और अमल करने से पार होना है। केवल किसी को गुरु धार कर और फिर यह आशा करना कि बाबे फकीर के पास जाकर नाम लेलो तुम तर जाओगे और काल चक्कर से बच जाओगे, यह बिल्कुल झूठ है धोखा, और धरेब है। यह तुम्हारे मन का भ्रम है इसलिए वह कहते हैं।

काल ने जगत अजब भरमाया, मैं क्या क्या करूं बखान।

मैंने आपको सिद्ध कर दिया कि यह सब मन का झगड़ा है जब तक कोई आदमी इस मन से परे नहीं जायेगा तब तक उसका जन्म मरण समाप्त नहीं होगा। मैं मन से परे नहीं जा सकता था। मैंने दाता दयाल से बहुत प्रेम किया। सोने का ताज चांदी के हक्के, रेशमी कपड़े और जो कुछ मुझसे हो सका मैंने किया। पिछले संत इशारा करते थे। हमारी समझ में इशारे नहीं आते थे। मैंने सोचा जो सच्चाई प्रिय हैं उन्हें सच्चाई वर्णन कर जाऊं। तुम्हारी इच्छा करे मेरे सत्संग में आया करो, न करे मत आया करो। अगर इच्छा करे तो मेरी कोई पुस्तक पढ़ो अगर न करे तो न पढ़ो अगर तुम मेरी शिक्षा को सच समझते हो तो चार पैसे मंदिर को देदो वरना मौज करो। मैं अपने जीवन को नाश करके और तुम्हें धोखा देकर नहीं जाना चाहता। पिछले किये हुये आज भोगता हूं अगर आज आपको सच्ची बात नहीं बताता और आपको ग़लत ढंग से अपने पीछे लगाता हूं तो मैं दोषी हूं। सब जगह धोखा

और फरेब है कोई सच्चाई नहीं बताता। अगर कोई सच्चाई बताता भी है तो तुम लोग सुनने के लिए तैयार नहीं क्योंकि तुम लोग सच्चाई के लिए नहीं जाते। मैं सच्चाई की तलाश में गया था मैंने केवल दो सांसारिक चीज़ें मांगी हैं। मैंने कभी भी दाता से यह नहीं मांगा कि मेरी उन्नति हो जाये, मेरे बच्चा या मेरा यह हो जाये। मैं यह देखना चाहता था कि वह मालिक का घर कौन सा है? मैं १९१८ में प्रातः ९ बजे से सायं पांच बजे तक उनके पांव पकड़ कर रोता रहा कि जो तुम्हारा राधास्वामी का मालिक है वह मुझे दिखाओ। वह तंग आ गये होंगे। अब मैं समझता हूं कि मैं मूर्ख था। वह कहने लगे, झोली कर, मैंने झोली कर दी। एक नारियल और पांच पैसे मेरी झोली में डाल कर मत्था टेक दिया। वह कहने लगे तुम में निनानवे अवगुण हैं परन्तु एक सच्चाई है। मेरा कहना मानो तुम्हें सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा जो तुम्हें उस घर का पता बतायेगा और तुम वहां पहुंचोगे। यह गुरुआई मुझे इस लिए दी थी कि मुझे अपने घर का पता लग जाये। अब मुझे पता लगना चाहिए कि नहीं

क्यों ? मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं। अमरीका से कल दो तारें आई हैं। वे लोग मेरा ध्यान करते हैं और मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है। उनके काम हो जाते हैं। मेरे तो बाप को पता नहीं होता न ही मैं जानता हू मैंने १९४२ के बाद किसी को नाम नहीं दिया। लोग मुझे गुरु मान लेते हैं। तो फिर काल क्या हुआ ? दयाल क्या हुआ ? तुम्हारा अपना ही मन, अपनी ही वासना, अपना ही विचार काल है। मन से परे चले जाओ वह दयाल है। इतना ही अन्तर है।

संसार में सुख चाहते हो तो आशा और विचार ठीक रखो। तुम्हारा संसार किसी सीमा तक ठीक हो जायेगा। यह वेद मार्ग है शिव संकल्पं अस्तु"। इस लिए मैंने शिक्षा को बदला। घरों में शान्ति से रहा करो। जिस घर स्त्री पुरुष या भाई-भाई का झगड़ा है वह काल है। तुम्हें कभी शान्ति नहीं मिलेगी। प्रवृति मार्ग का नियम और है और निवृति मार्ग का और। मैंने निवृति मार्ग का नियम आपको बता दिया कि मेरी समझ में क्या आया ? क्योंकि मुझे पता

लग गया कि मैं किसीके अन्तर नहीं जाता। यह उनका अपना विश्वास और खेल है। अब मैं कोशिश करता रहता हूं कि मन को छोड़कर इससे परे चला जाऊं। मन से परे प्रकाश और शब्द है और यह शब्दयोग ही सन्तों का मार्ग है। जबतक कोई आदमी मन के चक्कर से नहीं निकलेगा वह आगे नहीं जा सकता और यही बाबा सावन सिंह जी महाराज कहा करते थे "दस दरवाज़े लंगो ते आगे जाओ"। वे दस दरवाजे क्या हैं? पाँच कर्मइन्द्रियों और पांच ज्ञानइन्द्रियों से अलग करो। यह अभ्यास, नाम, सुमिरन ध्यान इसी वास्ते दिया जाता है कि हम मन से आगे चले जायें। सुमिरन ध्यान करने का एक लाभ यह भी है कि सुमिरन और ध्यान करने से तुम्हारा मन बलबान हो जायेगा। जो कुछ तुम सोचोगे और चाहोगे या इच्छा करोगे वह पूरी होती रहेगी। यह भेद है जो मैं आप लोगों को बताना चाहता हूं।

दाता! आपने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। मुझे पता नहीं कि मैं ग़लत या ठीक हूं। जो मेरे साथ बीता है, वह कहता हूं। इस संसार में सुख कहां है।

जिनकी लड़कियें हैं, वे हर रोज़ मेरे पास रोते हुये आते हैं। किसी की पांच पांच छः छः लड़कियें हैं लेकिन उनके पास धन नहीं। बेचारे किधर जायें। मैं उन्हें हंसता हूं जब लड़कियें पैदा कीं तो क्या मुझ से पूछा था ? वह खुदरौ संतान है। हम लोग काम अंध में फंसकर संतान पैदा करते हैं फिर दुखी होते, रोते और चिल्लाते हैं और गुरुओं और डाक्टरों के पास लुटते हैं। इससे क्या लाभ ? स्वामी जी कहते हैं।

काल ने जगत अजब भरमाया, मैं क्या-क्या करूं बखान।

मैंने तुम्हें प्रमाण दे दिया कि काल ने जगत कैसे भरमाया। काल तुम्हारा मन है, इसे समझ नहीं और यह ग़लतियें खाता है और अपने कर्म का दण्ड भोगता है। तुम्हारे मन के विचार में बड़ी भारी शक्ति है। काल कोई मामूली शब्द नहीं है जिसने संसार रचा है वह तो बड़ा काल है। तुम्हारा मन बड़ा शक्तिशाली है। मैं इसका प्रमाण देता हूं। तुम्हें रात को स्वप्न में क्रोध आता है, तुम किसी को मारते हो, तुम्हारा हाथ हिल जाता है और तुम डर जाते हो' बढ़बड़ाते हो, ज़बान बोलती है, दूसरे सुनने वाले भी घबरा जाते हैं। तुम नौजवान हो, स्त्रियों का तो

मुझे पता नहीं, तुम स्वप्न में एक कल्पित स्त्री बना लेते हो उससे भोग करते हो तुम्हारा वीर्य निकल जाता है। जो तुमने स्वप्न में विचार किया है वह तुम्हारे वश में नहीं। अगर कोई चाहे कि वह अपनी इच्छा से स्वप्न देखे तो यह नहीं हो सकता। जो मस्तिष्क पर संस्कार पड़े हुये हैं और फिल्म बनी हुई है वे स्वप्न में आयेंगे। जब स्वप्न का विचार तुम्हारे वश में नहीं है, उसका प्रभाव तुम्हारे शरीर पर पड़ता है तो जाग्रत में जो कुछ हम सोचते हैं उसका प्रभाव तुम्हारे पर क्यों न होगा। इसलिए बार बार कहा है, हिन्दु भी कहते हैं कि शिव संकल्पं अस्तु। अपने विचार को ठीक रखो। घरों में प्रेम रखो। किसी से शत्रुता मत करो। आपिस में प्रेम से रहो फिर उसका इलाज संतों ने क्या बताया है यह आगे बताता हूं।

जो साधन थे पिछले युग के, सो कलीयुग में किये प्रमान
जो पहले तरीके थे वे समाप्त हो गये।

स्थाई सुख को पाने के लिए कोई मूर्ति पूजा करता है। मूर्ति पूजा ठाकरों की भी है और मूर्ति

पूजा गुरु की भी है। कई आदमी मेरे पास आते हैं। भई! क्यों आये हो ? वे कहते हैं, दर्शनों के लिए आये हैं। क्या मेरे दर्शन से वे सतलोक चले जायेंगे ? जिस प्रकार एक आदमी मूर्ति के पास जाता है। वह अपने विश्वास से आनन्द लेता है मगर मूर्ति पूजा से चाहे तुम मेरा ही ध्यान करते रहो तो क्या तुम मेरा ध्यान करने से आवागवन से बच जाओगे ? झूठ है, धोखा और फरेब है। क्यों ? मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं। एक आदमी मेरा ध्यान करता है। मैं तो होता नहीं। वह किसका ध्यान करता है ? वह अपने ही मन का ध्यान करता है। इस अज्ञान ने क्या किया ? हज़ारों धर्म बन गये कोई बाहर से नहीं आता और न ही कोई गुरु किसी के अन्तर जाता है। हमें धोखा दिया गया है। हम अज्ञानियों को बच्चों को तरह "कीड़ो का आटा गिर गया ओए" झूठा सहारा दिया गया। ऐसा मैं क्यों कहता हूं ? क्योंकि मेरे सामने बहुत से गुरुओं ने माना कि हम नहीं जाते। मैं कैसे मानूं, मेरे साथ हर रोज़ बीतती है। अमरीका में मेरा रूप प्रकट होता है। वहां से तारें आ रही हैं।

मुरख पानी मन सैलानी,
सो अटके जल और पखान।
बुद्धीमान अभिमानी जो नर,
विद्या नारी के हुए गुलाम।
बाकी जीव बीच के जितने,
ना मूरख न अति बुद्धीमान।
जप तप व्रत संजम बहु धोखे,
पंच अग्नि में जले निदान।

कभी मैं इन बाणियों को पढ़ा करता था तो मेरे दिल को दुख होता था। अपने पूर्वजों का कौन खण्डन सुन सकता है मगर दाता दयाल से मेरा बिश्वास नहीं टूटता था। तो मैं देखना चाहता था कि इसमें क्या सच्चाई है। असली मालिक कहाँ हैं? ये सब मन के खेल हैं और यह मन ही काल है। जब तक हम मन से नहीं निकलेंगे तब तक हमारा आवागवन समाप्त नहीं होगा। मुझे क्या पता दुर्गादास कहाँ गया। मैं दो दिन पहले टांडे में था। जब से दुर्गादास से मेल हुआ, आज इकासठ साल हो गये कभी स्वप्न में नहीं आया। गोपाल दास, भण्डारो, तुम लोग कभी स्वप्न में नहीं आये। रेलगाड़ी अवश्य

आती है। मैं जगजीतसिंह के मकान पर सोया हुआ था तो साढ़े चार बजे क्या देखता हूं कि एक गाड़ी खड़ी है, उसमें लोग जा रहे हैं। उधर से दुर्गादास भी आया। उसने राधास्वामी की और मैंने पूछा कि कहाँ जा रहे हो ? वह कहने लगा कि जैपुर जा रहा हूं। यह क्या खेल है मेरी बुद्धि काम नहीं करती। मैं इस समस्या को हल नहीं कर सकता सिवाय इसके कि यह सब मन का खेल है। वह कहाँ गया, क्या पता ? मैं नहीं मानता कि वह आया होगा। क्यों नहीं मानता ? जब मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो कैसे मानलूं कि वह आया होगा। यह अपने ही मन का खेल है और कुछ नहीं। कोई कोई इस मन के खेल से बचता है।

देखो चरित्र काल करता के,
कोई सिर कोई पैर रूंधान।

वह काल (Creator of world) के चरित्र बताते हैं। संत कहते हैं इससे निकल जाओ। कैसे निकलो ? अपने आपको कर्मइन्द्रियों और ज्ञानइन्द्रियों से अलग कर लो। यह साधन हैं। बस और कोई

साधन नहीं। हम क्या साधन करते हैं ? गुरु का ध्यान लगा हुआ है। लोग बैठे हुये हैं। उनकी कितनी संगत खड़ी है। इतना उनका लंगर लगा हुआ है और इतना मकान बना हुआ है। अरे ! ऐसी बातों से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। हम राम का ध्यान करते हैं उन्होंने हाथ में धनुष ली हुई है। आगे आगे राम और पीछे पीछे लक्षमन है बीच में सीता है। ऐसे विचार हम अपने मन में रखते हैं। मैं स्वयं इनमें फंसा हुआ था। दाता दयाल के रूप से फंसा हुआ था। जिस साल मैं दस बारह हजार रुपये का सामान लेकर दाता दयाल के पास आर्ति करने गया था तो उस समय मुझे पहला शब्द लिखा था मगर उन्होंने खोलकर नहीं बताया। इशारा किया। मैंने खोल कर कहा। जब से १९४२ से मैं बाबा सावनसिंह के चरणों में गया तो उसके बाद वह सत्संग में कहा करते थे अरे ! तुम मेरी बात नहीं सुनते कोई डन्डे मारने वाला आ जावेगा। मैं डन्डे मारने वाला हूं। मैंने हाथ में डंडा नहीं पकड़ा, वचन के डंडे मारता हूं। सच्चाई वर्णन करता हूं जिसे अज्ञानी और टेकी सुनने से घबराते हैं। जिस प्रकार डंडा खाने से कष्ट

होता है उसी प्रकार अज्ञानी जीव सच्ची बात सुनकर घबराते हैं। हाय ! यह बूढ़ा क्या कह रहा है। मगर जो कुछ मैं कह रहा हूं वह ठोक है। मैं उसका प्रमाण तुम्हें वाणी से दे रहा हूं ताकि कोई यह नहीं कह सकता कि मैं जो कुछ कह रहा हूं अपनी ओर से कह रहा हूं। मेरे शब्द और वर्णन शैलो अपनो है मगर बाणी स्वामी जी की है।

भटक भटक भटकाया सब जग।
कोई न लगाया ठौर ठिकान।

जब मैं इस वाणी को पढ़ता था तो मैंने रोना ही था क्योंकि जज्वा उठता था कि मैं भी वहां पहुंचू जहाँ ये कहते हैं। उसके लिए कुरबानी करनी पड़ती थी। मैंने जो कुछ कुरबानी करनी थी, वो मैंने अपनी ज़ात के लिए सारी आयु झूठ नहीं कहा। किसी का अनुचित ढंग से धन नहीं खाया। मंदिर की सब्ज़ी और दवाई मुफ्त नहीं लेता। सोलह साल से मंदिर बना हुआ है। आप लोगों का धन आता है। मैंने कभी अपनी जेब में पैसा नहीं रखा। मेरा अपना पैसा भी नहीं होता। अगर कोई देता है तो चार दिन के वाद भी जेब से निकालकर मंदिर में दे

देता हूं। क्योंकि मैं समझता हूं कि यह मंदिर का है, मेरा नहीं। मैंने सच्चाई की खोज में जीवन व्यतीत किया है। एक अवगुण मुझमें अवश्य रहा कि मैं छोटी आयु में काम में फंस गया। उसके वाद वारह साल बचा रहा जबकि मैं वसरेबग़दाद रहा। जब वापिस आया तो फिर पांच साल फंसा। फिर होश आई और अपने आपको सम्भाला। सिवाय इसके और मुझमें कोई दोष नहीं था। किसी के साथ धोखा फरेब नहीं किया और न ही किसी की बुराई की। यह पंथों के वारे मैं अवश्य कह देता हूं कि भई! अगर कबीर साहिब या बाकी संतों को यह अधिकार था कि उन्होंने राम कृष्ण को काल का अवतार कहा तो मुझे भी अपनी बाणी कहने का अधिकार है। वह बाणी में लिखते हैं।

इनही भरौसे तुम मत रहिओ।

कबीर साहिब कहते हैं कि राम, कृष्ण और विश्वामित्र ने मुक्ति नहीं पाई, इनके भरोसे मत रहना। मैंनें ब्राह्मण होते हुये यह सब कुछ सहन किया। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर चलूंगा और देखुंगा कि सच्चाई क्या है। अगर आज मुझे

सच्चाई न मिलती तो मैं कबीर साहिब, राधास्वामी-मत और गुरु नानक साहिब के विरुद्ध बिल्कुल ज़हर उगल जाता कभी परवाह न करता मगर अब मैं सच्चाई कहने और सुनने के लिए विवश हूं। अगर मुझे संतमत पर विश्वास दिलाया तो आपलोगों ने दिलवाया। दाता दयाल नहीं दिला सके। उनसे मुझे प्रेम, आनन्द और सहारा मिला मगर सच्चाई का पता मुझे तुमलोगों से लगा और यही उन्होने कहा था जब मुझे काम दिया था कि तुझे सच्चा सतगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। मुझे सतज्ञान मिल-गया। मेरी समझ में बात आगई कि यह सब मन का खेल है और कुछ नहीं। जबतक तुम मन में हो तब-तक स्थाई जीवन प्राप्त नहीं कर सकते।

ऐसी हालत देख जगत की, सन्त सतगुरु प्रगटे आन।
गुरु सेवा और नाम महातम, सत्संग सतगुरु किया बखान।

संसार ने गुरुसेवा को नहीं समझा। संसार वालों ने गुरु की सेवा यही समझी है कि मानवता मंदिर के दो कमरे बनादो। बाबा फकीर को कपड़े या जूते लाकर दो। यह संसार का व्यवहार है। अगर धन देने से गुरु सेवा मिल जाती तो ये बड़े-बड़े

धनी आदमी ही लेजाते। जो तुम धन से सेवा करते हो इससे तुम्हारा प्रवृत्तिमार्ग बनता है। धन देनें से धन मिलेगा। मगर लाख रुपया दान देने से अगर तुम यह आशा रखो कि तुम्हारा आवागवन चला जायेगा यह समाप्त नहीं होगा। कोई नहीं समझता कि गुरु सेवा क्या है। गुरु सेवा है जैसे बाणी में लिखा है।

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन सुनकर नित मन में गुने।
गुन-गुन काढ़ लये तिस सारा, काढ़ सार तिस करे अहार।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गंवाई।

यह गुरु सेवा है। मैं बोल रहा हूं। तुम मेरी बातों को सुन रहे हो तब तुम गुरु सेवक हो। केवल मंदिर में दो सौ या चार सौ रुपया देने से गुरु सेवक नहीं बनोगे। अगर रुपया दोगे तो तुम्हें रुपया मिलेगा यह संसार का व्यवहार है। मगर अगर तुम दान इसलिए देते हो कि उसका फल मिले तो तुम्हें उसका फल लेने के लिए दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। सदा निष्काम सेवा किया करो तब बचोगे वरना नहीं बचोगे।

गुरु सेवा और नाम महात्म, सतसंग सतगुरु किया वखान।

वह कहते हैं कि इसका इलाज यह है कि तुम सत्गुरु की संगत करो और गुरु की सेवा करो। नाम क्या है ? गुरु के मुंह से जो बचन निकलता है वह नाम है। जो उस बचन पर अपने अन्तर अमल करता है, वह नाम है। एक तो बाहर के गुरु का शब्द है जैसे मैं कह रहा हूं। इस को सुनकर जो अन्तर का शब्द सुनना है, वह नाम है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द ! तू बता कि तूने अन्तर के शब्द सुने ? अगर सुने तो तुझे क्या मिला ? क्या अन्तर के शब्द सुनने से तू आवागवन से बच गया है ? मैं अपनी बाबत जानता हूं। मैंने बसरेबग़दाद में बीनें सुनी, बड़े २ प्रकाश देखे। इतना प्रकाश देखा कि मैं रज़ाई में बैठा हुआ छत की कड़ियें गिन सकता था। मगर जब मैं वापिस हिन्दोस्तान आया तो क्या मैं कामी नहीं हुआ ? दाता दयाल ने कहा तेरे संतान नहीं है, संतान पैदा करो। अगर स्त्री के पास संतान के लिए जाता तो कोई दुख न था, मैं तो स्वाद में फंस गया यह ठीक है कि मैंने सारा जीवन रिश्वत नहीं खाई मगर क्या मेरे दिल में यह विचार नहीं आता था कि मेरी उन्नति हो जाये। मैं अब भी अपनी आत्मा

से पूछता हूं कि क्यों फकीर चन्द ! तुझे यह इच्छा नहीं कि लोग मंदिर में चार पैसे दे जायें तो मंदिर चले ? अवश्य इच्छा है। जब स्टाफ के आदमी ग़लती करते थे तो क्या तुझे क्रोध नहीं आता था ? आता था। केवल शब्द सुनने से काम नहीं चलता मगर बिना शब्द सुनने के भी चारा नहीं। केवल शब्द अन्तिम अवस्था नहीं है। शब्द अभ्यास और सत्संग दोनों चीज़ें आवश्यक हैं। जो अकेले अभ्यास ही करते हैं और शब्द पर ही बल देते हैं किसी पूर्ण पुरुष का सत्संग नहीं करते वे भी अधूरे हैं। जो केवल सत्संग ही करते हैं अभ्यास नहीं करते वे भी अधूरे हैं। इसलिए सत्संग और साधन दोनों इकट्ठे होने चाहिए। मुझे दोनों से क्या लाभ हुआ ? मैंने अभ्यास किया, धुनें सुनीं फिर भी कामी हुआ यद्यपि मैं बाहर नहीं गया अगर संतान के विचार से स्त्री के पास जाता तो और बात थी मैं तो स्वाद के लिए स्त्री के पास जाता था। मैंने फिर क्या समझा ? आप सत्संगी मेरे सच्चे सत्गुरु सिद्ध हुये। जब से मुझे यह विश्वास हुआ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे पता लग गया कि मेरे अन्तर जितने विचार, संकल्प पैदा होते

हैं ये भी कल्पित और माया हैं। ये है नहीं लेकिन भासते हैं। जिस प्रकार मैं तुम्हारे अन्तर प्रगट होता हूं लेकिन मैं तो होता नहीं, यह तुम्हारी ही कल्पना है। जब मैं १९२१ में दस बारह हजार रुपये लेकर आर्ति करने गया तो वह इन्कार करते थे लेकिन मेरे दिल में सेवा करने का जज्बा था। मैंने अपने शब्दो में आरती की। उसके बाद जो शब्द उन्होने मेरे नाम लिखा था वह निम्न लिखित है।

चेत-चेत-चेत अभी चेत मेरे भाई।
राह से कुराह भया भूला भरमाना।

मुझे लिखते हैं भई! चेत, तू राह से कुराह हो गया है।

चेत-चेत चेत अभी, चेत मेरे भाई।
राह से कुराह भया, भूला भरमाना।
कहां बसे कहां नसे, ठौर न ठिकाना।
संगी नाहिं साथी नाहिं, कोइ न सहाई।
ताक में है चोर डाकू. कोई न सहाई।
सोया सो पूंजी खोया, पूंजी खोय रोया।
फल पाया आप बुरा, जैसा बीज बोया।
यह तो नहीं तेरा देश, देश है बिगाना।

यहां सब बेगाने बसें. कोई न यगाना।
गुरु ने उपदेश दिया, और तुझे चिताया।
संत पंथ धार हिये. कटे मोह माया।

मेरी मोह माया नहीं कटती थी। उस मोह माया को काटने के लिए मुझे यह' काम दिया था। जब तुम लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास होगया कि तुम्हारा अपना ही विचार है। मेरे अन्तर भी जो कुछ प्रकट होता है मेरा अपना ही विचार है। मेरा मन ही गुरु और चेला था। मैं तुम लोगों को आज़ाद कर जाना चाहता हूं जो आज़ाद होना चाहते हैं।

बन्धे को बन्धा मिले छूटे कौन उपाय।
कर संगत निर्बन्ध की जो पल में लये छुड़ाये।

मैं निर्बन्ध पुरुष हूं। यह ठीक है कि मैंने मंदिर बनाया है और मुझे रुपये की आवश्यकता रहती है मगर मैं इसकी परवाह नहीं करता जब तक रुपया आता है मंदिर चलाऊंगा। मैंने किसी का ऋण नहीं देना है कि जरूर ही हस्पताल खोलूंगा। अगर धन नहीं

आयेगा तो हस्पताल बन्द कर दूंगा। इसकी मैं चिन्ता नहीं करता। यह तो मेरा कर्म और खेल है। तुम्हें बता रहा हूं कि दाता ने मुझे कहा था कि अपने बच्चों का पेट काट कर कभी भी दान मत दिया करो। तुम भूल में हो हम लोग तो ठग हैं। जो गुरु सच्ची बात नहीं बताते उन्हें मैं ठग समझता हूं जो यह कहते हैं भई! नाम लेलो और दसौंध देते रहो चाहे तुम्हारे बच्चे ही भूखे मरते रहें। यहाँ पर जो तुम्हारा धन आता है हम गरीबों की सहायता करते हैं। क्या उसका फल मुझे मिलेगा ? नहीं। उनको फल मिलेगा जिनका रुपया आता है। इसलिए बार बार कहा जाता है कि।

शिष्य को ऐसा चाहिए जो गुरु को सब कुछ दे।

मगर गुरु के लिए क्या शर्त है।

गुरु को ऐसा चाहिए शिष्य का कुछ न ले।

यह परोकार का काम है। आप यहां आते हैं। शामयाने, लौडस्पीकर और लंगर की भी आवश्यकता है यह संसार का व्यवहार है। मगर अगर लंगर लगा देने से कोई आदमी तर जाये तो सारा संसार तर

जाता। हर जगह बहुत सत्संग होते हैं। मैं जानता हूं कि तुम मेरी बात को नहीं सुनोगे मगर मैं अपना कर्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूं। मेरे जिम्मे यह कर्तव्य था कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने जो समझा वह कहता हूं। यह दावा नहीं करता कि जो मैंने समझा है ठीक है या ग़लत है। शब्द क्या है? वह असली शब्द है। पहले बाहर के गुरु का बचन शब्द है फिर जब मैं अन्तर में शब्द धारण करता हूं तो शब्द होता है और रोशनी भी होती है फिर मैं उस चीज़ की तलाश करता हूं कि प्रकाश को देखने और शब्द को सुनने वाला कौन है। जब कभी दो या तीन महीने बाद उसकी ओर ध्यान जाता है तो वहाँ ऐसी अवस्था आ जाती है कि जहाँ न मैं न तू, न शब्द न स्वामी है। बेखबरी आ जाती है। कुछ पता नहीं कि क्या होता है। तो मैं इस परिणाम पर आया हूं कि अगर मैं वहां पहुंच कर कुछ कर सकता होता तो मान लेता कि मैं कुछ बन गया हूं। मैं न सही क्या दूसरे गुरु कुछ कर सकते हैं? ये पांच पांच छः छः साल बीमार हुये, उनके लड़के बदमाश हो गये, अपनी स्त्रियों से अनबन

रही तो ये कुछ न कर सके। फिर मुझे शब्द योग से क्या मिला ? यह मिला कि मैं कौन हूं। मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। जब शब्द खुलता है उसमें जो चेतनता आ जाती है वह मैं हूं। जब वह चेतनता शब्द से अलग हो जाती है तो न चेतनता है और न शब्द है। अकह अपार, अगाध और अनामी। अपनी हस्ती खो दी। मेरी समझ में तो यही आया है कि प्रकृति के भेद का पूरा पता न कबीर को लगा, न ऋषियों को लगा, न स्वामी जी को लगा न गुरु नानक साहिब, न दाता दयाल को और न मेरे बाप को लगा।

दौड़त-दौड़त दौड़या जहां लग मन की दौड़।
दौड़ थका मन थिर भया, चीज़ ठौर की ठौर।

अपना आप ही समाप्त हो जाता है न मैं न तू है।

कहां किसमें मैं है कहां किसमें तू है।
सब कहने सुनने की गुफतगू है।

यह मेरे जीवन का परिणाम हुआ। मगर यह तब होगा जब तुम आप साधन और सत्संग करके अपने

आपको देख लोगे तब पता लगेगा। मेरी आयु सच्चाई की तलाश में व्यतीत हो गई। दाता! आपके चरणों में गया था जो मेरी समझ में आया वह कहता हूं। मुझे भी अधिकार है कि मैंने जो सच्चाई समझी उसे कह जाऊं। तुम मेरे बहन भाई हो। मैं किसी बात का दावा नहीं करता। मैं न किसीको चेला बनाना चाहता हूं और न अपने पीछे लगाना चाहता हू। तुम्हें सच्ची बात बता जाना चाहता हू। क्योंकि दाता ने मुझे कहा था।

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर लेजा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी।

मैं जो मुख से कहता हू वही मेरा नाम दान है। मैंने लोगों को मकान में बन्द करके नाम नहीं दिया। मैं जो कहता हूं सत्संग कराता हूं उसे कई आदमी सुनते और अमल करते है उन्हें लाभ पहुंच जाता है। जो अमल नहीं करते उन्हें लाभ नहीं होता। मेरे जिम्मे एक कर्तव्य था, गुरु ऋण था।

लूट पड़ी लूट से बचाले धन अपना।
सह न काल कर्म चोट सोध ले मन अपना।

मैंने बारह साल जो कमाया, सब दाता दयाल के चरणों में भेंट कर दिया। मेरा जज्बा था क्योंकि मैंने सुना था कि गुरु की सेवा करो तब तुम्हें वह घर मिलेगा। अढ़ाई हज़ार रुपया उन्होंने मेरी स्त्री को प्रसाद के रूप में वापिस कर दिया। साढ़े तीन हज़ार रुपया अपने द्वारा मेरे नाम पंजाब नैशनल बैंक लाहौर में जमा किया जो कि मुझे वापिस कर दिया। जब तीस साल बाद गीदड़वाहे आये तो बीस हज़ार रुपया मेरी स्त्री को दे दिया और मुझे कहा इसमें से तुमने खर्च नहीं करना तुम्हारा कोई अधिकार नहीं। यह तुम्हारी स्त्री और बच्चों का हक्क है। तुम अपनी कमाई आप करके खाओ। मेरे अन्तर जज्बा था, मैं देखना चाहता था कि सच्चाई क्या है? राधास्वामीमत या कबीरमत क्या कहता है? सबकी उन्होंने ऐसी तैसी फेरी हुई है। व्यास भी भूल गया। कृष्ण भी भूल गया। ये सब काल के अवतार थे। मैं ब्राह्मण हूं। कोई इस बात को सुनता है? मुझे ऐसा सुनकर दुख होता था। अगर सिक्खों

को गुरु नानक साहिब के विरुद्ध और मुसलमानों को क़ुरान शरीफ के विरुद्ध कह दो तो सिर फाड़ देंगे। मैं देखना चाहता था कि असलियत और सच्चाई क्या है ? इसका पता मुझे सत्संगियों ने दिया। इस प्रकार पिछले ज़माने में स्पष्ट वर्णन का दसतूर नहीं था।

सांच कहूं तो मारसी यह तुरकानी ज़ोर,
बात कहूं परलोक की कर गह बांधे चोर।

कबीर साहिब ने भी कहा, मगर इशारे में कहा। स्वमी जी और बाबा सावनसिंह जी ने भी इशारों में कहा क्योंकि उस समय विदेशी राज्य था। अब अपना राज्य है। मैंने इस भेद को क्यों खोला ? इसलिए कि लोगों को पता लग जाये कि जिस धर्म या मालिक के लिए लोग आपिस में बटे हुये हैं, इकट्ठे हो जायें। देखते हो संसार में क्या हो रहा है पाकिस्तान में क्या हुआ। मुसलमानों, सिखों और हिन्दुओ के सिर कट गये। ऐसा क्यों हुआ। क्योंकि उन्हें सच्चाई का पता नहीं था। इसलिए मैंने इस सच्चाई को खोला है और कोई बात नहीं।

मैंने आप संसार वालों को बता दिया कि तुम्हारे विचार में बड़ी शक्ति है। मैंने स्वप्न का उदाहरण तुम्हें देदिया। सदा अच्छा विचार रखो। संतान को संतान के विचार से पैदा करो। खुदरौ (Uncalled-for) संतान कभी तुम्हारे और देश के लिए लाभ दायक नहीं हो सकती। कौम को बनाने वाली माताएं होती हैं। माताओं की जिम्मेवारी होती है और कुछ आदमी की भी है। स्त्री केवल संतान पैदा करने के लिए है न कि विषय विकार के लिए है। अब ज़माना बदल गया है इसलिए हम सब दुखी हैं। अच्छी संतान पैदा करो। जिस प्रकार के विचार मां बाप के मिलने के समय होंगे वही बच्चे पर प्रभाव पड़ेगा। यह मैं क्यों कहता हूं ? आज़माया हुआ है। पहली स्त्री के समय मैं कृष्ण का ध्यान करता था। जब पंथ में नहीं आया था उस समय मैंने अपनी स्त्री को कहा कि तेरे लड़का होगा। लड़का पैदा हुआ। जहां पैदा हुआ वहाँ सामने तारा चन्द ज्योतिषी का मकान था। उसकी लड़की विधवा थी उसने पूछा सामने मकान में स्त्रियें क्यों इकट्ठी हो रही हैं ? उसने कहा कि मस्त राम के घर पोता हुआ है। हर

काम वाले को अपना अपना खबत होता है। उसने समय देखकर अपने कागज़ पर टेवा बनाया। उसने कहा लड़का नहीं बचेगा। उसकी लड़की ने पूछा क्यों ? उसने कहा कि जिस ग्रह में पैदा हुआ है यह या तो योगीराज होगा या राजा होगा। इसका बाप तारबाबू है और बाबा सिपाही है। पता नहीं यह किस भाग से यहां आ गया। कुछ लेने देने का कारण था। फिर मेरा बाप उसके पास गया कि टेवा बनादे वह कहने लगा अगर पांच साल जीवित रह गया तो फिर टेवा बनाऊंगा यह तुम्हें और तुम्हारे देश को तार जायेगा। वह अढ़ाई साल के बाद मर गया। यह मेरा अनुभव है। आप गृहस्थियों को बिना किसी लज्जा के कहना चाहता हूं कि जब स्त्री पुरुष मिलते हैं तो अच्छे विचार रखा करो अच्छी संतान की इच्छा किया करो तुम्हारी संतान अच्छी होगी।

मेरी बड़ी लड़की आधी उन्मत है। मैं चाहता था कि मेरे जो बच्चा पैदा हो वह न कामी, न क्रोधी न मोही, न लोभी, और न मानी हो। मैंने गुरु महाराज जी को लिखा। उन्होंने कहा, जैसा तुम चाहते हो हो जागेगा। मैंने उसका विवाह कर दिया

लेकिन उसके पती ने उसे नहीं बसाया। अब वह मेरे घर में रहती हैं। मैं ही जानता हूं कि उसके कारण मुझे कितना खर्च सहन करना पड़ता है।

मैं अज्ञान के प्रेम का हाल बताता हूं। मेरी अज्ञान की भक्तिन थी। दाता दयाल अमरीका चले गये। मैं उनकी कुटिया में गया और उनकी पुरानी खड़ाओं अंगोछे और कपड़े धोती आदि लेआया। मैंने अपनी स्त्री को कहा कि जब बच्चा पैदा हो जाये तो इन कपड़ों से उसे साफ कर देना। मेरी स्त्री ने ऐसा ही किया अब वह अड़की सदा गन्दे कपड़े ही पहनती है यद्यपि किसी चीज़ की कमी नहीं है। जहां तुम परमार्थ के लिए आते हो वहां स्वार्थ की बातें भी लेजाया करो। अच्छी संतान पैदा करो। छोटे बच्चों को मत मारा करो तुम्हें पता नहीं उनकी आह पड़ती है। मैं अपनी बाबत बताता हूं। मेरा छोटा भाई वज़ीर चन्द था। जब मां रोटी पकाने लगती थी तो उसे खिलाने के लिए मेरी गोद में दे देती थी मैं उसे खिलाता था। एक दिन मैं गिर गया। नीचे वज़ीर-चन्द पड़ा और उपर से मैं गिर गया। उधर से माता ने आकर मुझे पाँच सात थपड़ जड़ दिये और फिर

लड़का मेरी गोद में देकर कहा इसे खिलाओ। अब वह जगह मुझे याद आती है और मैं पछताता हूं। एक रास्ते के बीच सड़क जाती थी वहाँ खड़े होकर मैंने कहा ऐ भगवन ! इसके कारण मुझे हर रोज़ मार पड़ती है या यह मर जाये या मैं मर जाऊं। तीसरे महीने वह मर गया। यह मेरा अनुभव है, बच्चों को मत मारा करो लेकिन आंख रखा करो। बड़ा आदमी तो जान बूझ कर ग़लती करता है लेकिन बच्चे को तो पता ही नहीं कि वह ग़लती कर रहा है। अगर बड़े आदमी को ग़लती करने पर दो थपड़ मारदो तो कोई बात नहीं। वह महसूस करता है कि उसने ग़लती की है।

बेशक राम राम मत जपो पहले अपनी रोटी का प्रबन्ध करो। हम महात्मा लोग रोटी के लिए ही तुम्हारे दरवाज़े पर भीख मांगते फिरते हैं। गृहस्थी का कितना अच्छा घर है जिसके दरवाज़े पर साधु और भिखारी भीख मांगते हैं। आप अच्छे हो कि संत अच्छे हैं ? नौजवान बच्चों को अपनी कमाई आप करनी चाहिए। जो अठारह बीस साल का बच्चा बेकार है और अपने बाप और भाई पर बोझ बना

हुआ है वह मूर्ख है। जो छोटा मोटा काम मिलता है उसे करना चाहिए अपने आप उन्नति हो जायेगी। ये संसारी बातें हैं। जहाँ आप परमार्थ के लिए आते हो वहां ये भी ले जाओ।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द ! तूने मकड़ी का जाला बनाया हुआ है क्या तू इस में आप नहीं फंस जायेगा ? मैं किस्मत का मारा हुआ हू। मेरे कर्म हैं। गुरु आज्ञावश मुझे यह काम करना है। कोई सुने या न सुने मुझे इससे क्या मतलब। दाता ने आज्ञा दी थी कि निबल अबल अज्ञानी जीवों की सहायता करना और उन्हे गुरु के देश पहुंचा देना। गुरु का देश वह है जो मैंने आपको बताया है कि जब मैं दो तीन महीने बाद शब्द से परे होता हू तो वहां न मैं, न तू और न संसार है। मैं कौन हूं ? संतों ने उसे अकह, अपार और अनामी कहा है। आया वह भगवान अकह, अपार और अनामी है या कि नहीं। वहां पर पहुंचकर संतों की अपनी सुरत गुम हो जाती है। असल में अकह, अपार, अनामी क्या है यह संतों को भी पता नहीं। इसलिए सबने बेअन्त कह दिया और किसी ने हैरत रूप कह दिया।

हो सकता है कि जो कुछ मैंने समझा है सारा ग़लत हो। मैं किसी बात का दावा नहीं करता। मेरी नीयत साफ है। क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूं? यह एक प्रश्न है। एक तो सच्ची बात बताता हूं दूसरे शुभ भावना देता हूं। दाता से प्रर्थना करता हूं कि ऐ दाता! आपने यह काम दिया था, जो लोग मेरे पास आते हैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि जिस नीयत, भाव, इच्छा से आते हैं वो पूर्ण हो जाये। इसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ नहीं। आपकी इच्छा करे आया करो न करे मत आया करो।

आज मीटिंग है मानवता मंदिर के लिये और प्रधान चुनना है। भारद्वाज के चरणों में मेरी विनती है कि वह इस भार को सम्भाले। ब्राह्मण होने के नाते मेरा आप पर हक भी है। जहाँ तक हो सकेगा आपको अधिक कष्ट नहीं होगा। भारद्वाज! मेरे पास शुभ भावना है वह देता हूं। सच्चाई वर्णन कर चला। इस नियम अनुसार अपना जीवन बनाओ और काम करो अपने आपको वजाय बाहर के वहाँ रखो।

सब को राधास्वामी!

सत्संग परम दयाल जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर।

१७ अगस्त, १९६९

राधास्वामी !

जिन्दगी बनी दुनियां देखी, ख्याल पैदा हुआ कि इस दुनियां का बनाने वाला कौन है? इस खोज में रोया, तड़पा, एक जिन्दगी का दृश्य था जो मुझ को दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के चरनों में ले गया। मेरा विश्वास था, वहां से यह राधास्वामीमत या संतमत मुझ को मिला था। इस में हर मज़हब का खण्डन था और इस में मालिक को मिलने का कोई और ही तरीका बताया हुआ था, जो मेरी समझ में नहीं आता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते चलूंगा, जो कुछ मुझे मिलेगा वो मैं बताऊंगा। मैं किसी पर अहसान नहीं करता, यह मौज है! आज शब्द पढ़ा गया :—

अब मन आतुर पुकारे।
कल नहीं पकड़े धीर ना धारे।
दम-दम छिन-छिन दरद दिवानी।
सोऊं न जागूं अन्न न पानी।
व्याकुल तड़पुं पिया तुम कारण।
डस डस आवत चिन्ता नागन।

यह हजूर महाराज राय सालिग राम साहिब का शब्द है। वह पांच छः साल रोते रहे। हकीकत की तलाश के लिये, सूख कर कांटे हो गये थे, फिर इन को चाचा प्रताप सिंह मिले, उन्होंने कहा मेरा भाई अभ्यास करता है, इनके पास चले जाओ। यहां से उन को जो कुछ मिला वो तो हजूर महाराज को पता होगा कि क्या मिला, मैं नहीं जानता। मैंने प्रण किया था कि मैं अनुभव कह जाऊंगा मैं नक्काल नहीं हूं। मुझे क्या पता हजूर महाराज को क्या मिला। बाबा सावन सिंह जी को क्या मिला या दाता दयाल को क्या मिला, मैं क्या जानूं। मैं यह क्यों कहता हूं? जो कुछ मुझ को अनुभव ने बताया वो इन सन्तों ने ब्यान नहीं किया शायद परदा रखा हो क्योंकि इन सन्तों की बानियाँ मेरे अनुभव से मेल नहीं खातीं इस लिए मैं नहीं

कह सकता कि इन सन्तों को क्या मिला, मैं ऐसा कहने का अधिकार रखता हूं।

मैंने इस रास्ते मैं सफर किया है। चेला बन के देखा और गुरु बन के देखा! जैसे यह ऊपर प्रार्थना है, मैं भी ऐसे प्रार्थना किया करता था। अब कई दूसरे आदमी हैं जो मुझे गुरु मान के, स्वामी जी मान के मेरे सामनें प्रार्थना करते हैं तो जो कुछ उन के साथ बीती वो मेरे सामने आती है कि नहीं आती है! तो वो उस बात से बिल्कुल अलग है जो कि वर्तमान राधास्वामीमत वाले या दुसरे सन्तों के अनुयाई कहते हैं, इस लिये मैं कहता हूं मुझें नहीं मालूम दाता दकाल को क्या मिला, स्वामी जी को क्या मिला, जो कुछ मुझे मिला वो बताता हूं।

इन्सान का मन किसी चीज़ की तलाश करता है। ज़िन्दगी कुछ चाहती है। ढूंडती है किसी चीज़ को और वो तलाश उसके अन्तर क्यों पैदा होती है? यह एक स्वाल मेरे अन्तर में आता है, यह इसवास्ते पैदा होती है कि शारीरिक जीवन अर्थात इन्सान के अन्तर जो शारीरिक प्रकृती है जब यह कमज़ोर हो जाती है, उस समय शरीर में बेचैनी पैदा होती है, तुम

देखो ! जिस की सेहत ठीक है, बच्चे को देखो वो किसी सूरत में भी ज्यादा रोयेगा नहीं, खुश रहेगा ! जिस की मन की आशायें कम हैं जिस की दुनियां की जरुरतें पूरी हैं वो भी कम हाय हाय करेगा, जिस को किसी बात का पता नहीं है स्वाभाबिक उसके अन्तर उस बात के जानने की कोशश रहेगी। तो तीन चीजें हैं जो हमारी ज़िन्दगी को अशान्त करती हैं, एक शरीर की कमजोरी, बीमारी, एक हमारी आशाओं का पूरा न होना और एक हमारा अज्ञान, इन तीन चीजों के कारण हम इस संसार में अशान्त होते हैं। किसी महा पुरुष ने अपने जीवन का कच्चा चिट्ठा पब्लिक के सामने पेश नहीं किया। हज़ूर महाराज के बचपन की क्या ज़िन्दगी थी, इसको मैं नहीं जानता, हजूर सांवले शाह के बचपन की ज़िन्दगी में जो उन के मन के अन्तर विचार पैदा होते थे मुझे क्या पता।

मेरी ज़िन्दगी में जो कुछ ख्यालात पैदा होते थे वो मैं जानता हूं। छोटी आयु में शादी होने को वजह से मेरे मन के अन्तर अशान्ती पैदा हुई थी, अब समझ आती है ! उस समय नहीं पता लगता था,

मैंने ज़िन्दगी का तजुर्बा किया है, यही बात एक बार हज़ूर साँवले शाह ने कही थी "सारी दुनियां" पत्रिका में कहीं छपी हुई है, अगर मुझको मालूम हो कि मेरा दूसरा जन्म होगा तो मैं दूसरे जन्म में बाल ब्रह्मचारी रहूंगा । यह बाबा सावन सिंह जी के अपनी ज़बान के बचन हैं । किसी महात्मा नें अपने मन की कमज़ोरियों को बताया ? Indirect way से सब बता गये । यह जितनी बानी है जहां मन के विकारों का ज़िकर है वहां ब्यान किया हुआ है मगर यह नहीं किसी ने कहा कि मेरे साथ यह बीती । मैंने प्रण किया था अपने जीवन का अनुभव कह जाऊंगा, क्या अनुभव कहना चाहता हूं ? कि इन्सान की अशान्ति का मुख्य कारण उसके मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य की गिरावट है तुम लाख नाम जपो, रोते रहो, पीटते रहो, गुरु के दरबार में जाकर, जब तक तुम अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को कायम नहीं रखोगे । अपनी सेहत का ख्याल नहीं रखोगे, तुमको शान्ति नहीं मिलेगी ।

मैं एक बार हज़ूर सांवले शाह के समय ब्यास गया था, १९४१ की बात है, मैं भी सत्संग में हाज़िर

था। जब मैं सत्संग से वापिस आया। मैंने एक लेख लिखा कि इस समय जितने यह सत्संगी बैठे हुए हैं। इनमें से किसी को Diabeteis है, किसी को जरयान है, किसी को अनेमिया है और किसी को कुछ है यह नाम जपते हैं, काश! यह नाम की वजाय अपने Character का, अपने ख्यालात का और अपने विचारों का ध्यान रखते। ऐसे मैंने चार सफे भरे। "सारी दुनियाँ" वाले को बुलाया मेरी जेब में साठ रुपये थे, दस मैंने अपने किराये के लिये रख लिये और पच्चास रुपये उसके आगे रख दिये, कि यह लेख छाप दो। उस ने लेख पढ़ा, वो कहता है, मैं नहीं छाप सकता, मेरी रोटी है यहां। मैंने अपने आप को सत सतगुरु वकत कहा है संसार में। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का, वो देता हूं। ऐ इन्सान! तेरी ज़िन्दगी की अशान्ति का मुख्य कारण तेरे मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य की गिरावट है।

मेरा एक मित्र है यहाँ बैठा हुआ है, उसने मेरे दाता दयाल से नाम लिया हुआ है। किसी देश में रहता था। वहां जाकर एक साधु के काबू आ गया, उसने कहा मैं तेरी सुरत चढ़ाऊंगा। दस हज़ार

रुपया दे के वहाँ लुट गया। दाता दयाल का चोला छूट गया। फिर किसी वक्त मेरे पास आया अपनी बात कही, मैंने कहा तेरी समाधि कैसे लगेगी। तू तो कामी रहा है। बोल !! उसने माना, यह मेरे तजुर्बे हैं। यह मैं संत सतगुरु वक़्त के रूप में संसार को बताना चाहता हूं कि लाख तुम प्रार्थना करो, लाख तुम सिर पटक के मर जाओ जब तक इस कुंजी को तुम नहीं पकड़ोगे तुम को शान्ति या मालिक का घर नहीं मिल सकता। मेरा अपना जीवन मेरे सामने है, मेरा तजुर्बा है, ज़ाती अनुभव, मैं कही सुनी बातों को नहीं देखता, न सुनता हूं। यही बात राय साहिब राय सालिग राम साहिब की ज़ातपाक ने एक किताब लिखी है। जिसमें लिखा है कि लोग नाम ले लेते हैं, जो अनुपान नाम के साथ बताया जाता है उस अनुपान को नहीं करते। उसका नतीजा इनको नाम का फल नहीं मिलता। यह मेरा सन्देश है। उस मालिक को मिलने वालों को या शान्ति की इच्छा करने वालों को कहे जाता हूं !

तो अशान्ति का पहला कारण यह है कि हमारी सेहत ख़राब होती है। इसके खराब होने का कारण

हमारी जीभ का स्वाद है ज़ियादातर कुछ हमारा विषय विकार का जीवन है। जो आदमी अभ्यास करते हैं, नाम जपते हैं अगर वो जीभ पर कन्ट्रोल नहीं रखेंगे। नाम भी जपेंगे और विषय विकार में भी रहेंगे, उनको नाम की प्राप्ती नहीं हो सकती।

मेरा अपना जीवन है, बसरे बगदाद में बारह साल रहा। मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य ठीक था। दाता ने कहा अब सन्तान पैदा करो फकीर ! अभ्यास छोड़ दो ! मैं घर में आया, अगर सन्तान के विचार से स्त्री के पास जाता तो मुझे कोई कष्ट न होता। मैं तो अपने स्वाद के लिये स्त्री के पास जाता रहा, नतीजा यह हुआ, मेरी सेहत गिर गई मजबूरन अनाज को छोड़ना पड़ा। मैंने पैंतीस साल अनाज नहीं खाया, गंदम नहीं खाई, चावल नहीं खाये, दालें नहीं खाईं, केवल सब्जी ही खाता था। जब मैं कहीं जाता, लोग कहते महात्मा जी बड़े त्यागी हैं महाराज ! बड़े त्यागी हैं त्यागी ! मैं उनको हंसा करता था। त्यागी नहीं हूं मैं ! यह मेरे बुरे कर्मों का फल है ! तुम सोचो ! मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा, संसार के प्राणियों के

हित्त के लिये मैं बचन कह रहा हूं कि एक तो हमारी अशान्ति का यह कारण है। तुम बेशक किसी गुरु के पास से नाम ले लो। जब तक अपनी जवान के चसके को, अपने विषय विकार के जीवन को नहीं छोड़ते तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। यह मेरा मतलब नहीं कि स्त्रीयों को त्याग दो। स्त्री साथी है तुम्हारा. जीवन की साथी है। मगर तुम लोगों ने जीवन के साथी का अर्थ यह समझा हुआ है कि काम को भोगने के लिये ही जीवन की साथी है। सोच लो !

तो ऊपर के शब्द में पुकार की गई है गुरु से। गुरु इस पुकार का उत्तर क्या देता है जीव को ? शान्ति के प्राप्त करने के लिये गुर बताता है, एक शब्द है।

अरे मन रसिया काया के वसिया

ऐसे ऐसे शब्द हैं यह तो कह देते हैं कि मांस शराब न खाया करो। जो असली चीज कहने वाली है वो तो कहता कोई नहीं ! भई, जीभ का स्वाद न लिया करो। मांस अपने आप छूट गया, शराब भी छूट गई, बस !!

दूसरी अशान्ति है हमारे मन की तरंगें और

आशायें, उसके लिये क्या ज्ञान है ? मौज पर रहना, जिनको नाम दिया जाता है उनके लिये पहली शर्त यह है जो राधास्वामी दयाल ने अपनी बानी में लिखी है कि ज़र, ज़न और ज़मीन को मौज के हवाले छोड़ के आ। क्यों कहा स्वामी जी ने यह ? क्योंकि स्वामी जी जानते थे कि स्वामी जी ने किसी को जर नहीं देना, जमीन नहीं देनी। अगर स्वामी जी ज़र, ज़मीन दे सकते होते तो यह शर्त न रखते। आंख खोलो, मैं क्या कह रहा हूं। क्यों ? क्योंकि जो कुछ तुम को इस दुनियां में मिलना है वो तुम्हारे प्रारब्ध कर्मों का फल है। जो कर्म यहां करोगे उनके अनुसार तुम्हारी जर, ज़न और ज़मीन का सम्बन्ध होता है। समझ रहे हो मेरी बात को, सत्संग में आते हो ! कान खोल कर सत्संग सुना करो वरना मत आया करो। क्यों अपना कीमती समय ज़ाया करते हो। जो कुछ किसी को मिलना है, मिलेगा या मिला वो उसके अपने ही कर्म का फल है। कोई महात्मा, कोई गुरु तुम्हारे प्रारब्ध कर्मों को नहीं काट सकता। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी की टांग टूट गई। उनके गुरु थे बाबा जैमल सिंह, क्या वह टांग टूटने से बचा सके ?

राय सालिग राम साहिब का लड़का मर गया। सत्संग मैं आये, स्वामी जी जरा उदास थे, पूछते हैं महाराज, उदास क्यों हैं ? उन्होंने कहा भई, तेरा लड़का मर गया है। हजूर महाराज बोले मुझे कोई अफसोस नहीं। स्वामी जी ने कहा अच्छा, हमें भी कोई उदासी नहीं। अब स्वामीजी ने हजूर महाराज के लडके को क्यों न बचाया ! क्या कह रहा हूं। संसार वालो आँखें खोलो। इस वास्ते सन्तोष रखो, हाय हाय करने से कर्म नहीं टलता।

आज प्रात: मेरे पास एक आदमी आया, उस की औरत का दिमाग़ ठीक नहीं, क्योंकि उसके बच्चा भी कोई न था। घर में कलह रखती थी वो आज सालों से दुखी थी। जब मैं फरीदकोट स्टेशन मास्टर था। चारपाई पर प्रात: बाहर लेटा हुआ था, तो वो आदमी मेरे पास आया था, कहने लगा, यहां कोई राधास्वामी का सत्संग होता है ? मैंने कहा और तो कोई नहीं मैं ही हूं, वो सत्संग में आता रहा, आज शब्द था :-

मत देख पराये अवगुण।
मक्खो सम मत करे भिन भिन ॥

इस शब्द पर मैंने अपना भाषन दिया, वो आदमी मेरे पांव पड़ा । बाबा जी ! आप ने बचा लिया । मैं अपनी औरत से दुखी होकर खुदकशी करने के लिये घर से निकला था, हम जब दूसरों के ऐब देखते हैं, हम अपने कर्मों को बढ़ाते हैं । क्योंकि जब किसी की बुराई करते हैं, किसी में ऐब देखते हैं, किसी के साथ ठगी करते हैं हम अपने कर्मों को बढ़ाते हैं । वो कहता था मैं भृगु संहिता में गया, वो कहता है तुम पिछले जन्म में यह थे, किसी औरत के साथ मिलकर उस के पति को मरवा दिया था । उस के फल से यह सज़ा मिली है । हिन्द फिलासफी ग़लत नहीं है । इसलिये ऐ संसार वालो ! मैंने अपने जीवन में गृहस्थ में भी और इस गुरु पदवी पर भी आकर बात को परदे में नहीं रखा जिस बात को पिछले सन्तों ने परदे में रखा । मैं डर गया ! लोग कहते हैं मेरा रूप उनके अन्दर प्रकट होता है, दवाईयां बताता है : सुरतें चढ़ाता है और मैं नहीं होता ! अगर मैं यह नहीं कहता पब्लिक को, चुप कर जाता हूं, उन के सामने लाऊड सपीकर रख देता हूं, सुनो भाई ! यह क्या कहता है ! Indirect Way से अपने मान के

लिये, तो मैं इस कुकर्म से कैसे बच सकता हूं ! सोचो मैं क्या कह रहा हूं ! तो हम एक दूसरे की बुराई करते हैं, निर्दोष को दोष लगाते हैं, अपने स्वार्थ के लिये, तो अवगुण ही देखते हैं ना ! इसलिये स्वामी जी जहां नाम देते हैं वहां जीवों को कहा गया है :-

मत देख पराये अवगुण, क्यों पाप बढ़ावे दिन दिन।
पर जीव सतावे खिन खिन, छोड़ अपने औगन गिन गिन।

जब यह कहते हैं कि अपने अवगुण छोड़ दे तो मैं भी सोचता हूं फकीर चन्द ! तू जब नुक्ता चीनी करता है मौजूदा ग़लत गुरुइज़म पर तो क्या तू यह अवगुन नहीं करता है ? यह मैं अपनी आत्मा को पूछता हूं, इस बाणी को सुन कर। जब मैं ऐसा कहता हूं तो मेरा भाव यह है कि क्योंकि मैं संत सतगुरु हूं, सच्चा ज्ञान देता हूं, जीवों का सुधार हो जाय, इन महात्माओं का सुधार हो जावे, सुधार करने के ख्याल से मैं कहता हूं वरना जो होता है होता रहे, मुझे क्या ! अगर मेरा यह तरीका भी ग़लत है तो दूसरों की ग़लतियों के बताने के दोष से तो कबीर साहिब और स्वामी जी भी बरी नहीं ! क्योंकि उन्होंने सब का खन्डन किया है। दोष तो उन्होंने भी देखा मगर

चूंकि उन्होंने जो खन्डन किया है वो जीवों के हित के लिये है। इन महापुरुषों व साधुओं के हित लिये कहता हूं, इसलिये अपने आप को दोषा नहीं गिनता।

मक्खी सम मत कर भिन भिन।
नहीं खावे चोट तू छिन छिन।
देखा कर सब के तू गुन।
सुख मिले बहुत तोहि पुन पुन।
मैं कहूं तोहि अब गन गुन।
तू मान बचन मेरा सुन सुन।
गति गाई मैं यह हंसंन।
यों वर्षा सुनाई संतन।
अब कान धरो इन बचनन।
नहीं रोवोगे सिर धुन धुन।

तो जहाँ गुरु नाम देता है वहां जीव को अनुपान बताता है, तो पहला अनुपान तो मैंने बोल दिया पेट को काबू रखो, इस में विष्णु महाराज रहते हैं तुम्हारी जठराग्नि है। अगरतुम्हारा हाज़मा ठीक है तो तुम्हारी ज़िन्दगी अच्छी रहेगी, तुम्हें शान्ति मिलती रहेगी। दूसरे, विषय विकार का जीवन कम करो, मेरा भाव बिल्कुल यह न समझना कि औरतों को त्याग दो।

जब मैं आटा चक्की पर काम करता था तो

मेरे पास एक रेलवे का रिटायर्ड अफसर ट्रंक और बिस्तरा ले के आया "मैं आप के पास रहूंगा! क्यों भाई"? मेरे पास जगह नहीं थी, मैंने कहा यह पूछ कि औरत से और बच्चों से तुम को छुटकारा कैसे होगा? यह न पूछ कि राधास्वामी मत क्या है। अब वो मेरी तरफ देखकर हैरान हो गया, आप को कैसे पता लगा? मैंने कहा मैं जानता हूं। फिर मैं गया ब्यास हज़ूर साँवले शाह के पास, वो आदमी नीचे से गुजर रहा था, उस समय मैंने हज़ूर साँवले शाह से कहा महाराज, यह आदमी मेरे पास आया था, कहता था, राधास्वामीमत क्या है? मैंने कहा तू यह पूछ कि तू औरत और बच्चों से कैसे छुटकारा पा सकता है? फिर मैंने कहा कि अगर हज़ूर यह तालीम दें चूंकि औरतों और बच्चों से जो तकलीफ़ हम को होता है, कुछ तो हमारे प्रारब्ध कर्म हैं, कुछ हमारा ज़ियादा विषय विकार का जीवन होने से हमारा Balance of Brain ठीक नहीं रहता, कहने लगे फकीर चन्द! बात तुमने सोलह आने ठीक कही मगर जीव ऐसे मूर्ख हैं कि अगर मैं यह कह दूं तो इनके घरों में दोनों में झगड़ा हो जायेगा। अगर

औरत ब्रह्मचर्य रखना चाहेगी तो मरद उसको तंग करेगा अगर मरद रखना चाहेगा तो औरत उस को तंग करेगा, बात उन्होंने सोलह आने ठीक कही।

अब मैं यह कहता हूं कुछ तो हमारे प्रारब्ध कर्म हैं मगर कोशिश यह करो कि जहाँ तक हो सके हम ख्याल होने की कोशिश करो। ज़िन्दगी बिषय विकार के लिये नहीं है। मैं सत्संग करा रहा हूं, सत्संग से मिलता क्या है :-

बिन सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई ॥

ज़िन्दगी के लिये जीने का राज़ मिलता है। तुम बेशक पचास पचास नर्ष के सत्संगी हो, सब को शिकायत है, क्या शिकायत है ? कि जो अनुपान तुम को बताया गया है नाम दान के साथ उस को तुम ने ग्रहन नहीं किया, इस शब्द मैं सबसे बड़ी चीज क्या है ? कि दूसरों के अवगुण मत देखो। अपने आप से काम रखो तब तुम्हारा साधन अभ्यास भी बनेगा और मन को शान्ति भी हो जायेगी। पिछले कर्म के अनुसार, तुम को दुनियां में मिलता है। दाता दयाल थे, मेरी नुक्ता निगाह से वो परम

तत्व, मालिक के अवतार थे, ठीक है। उनको जब पिछली उमर में राहु आ गया, तो उन के एक चेले थे ज्योतिषि, उन्होंने कहा महाराज ! राहु आ गया। अब आप का काम काज सब फेल हो जायेगा। हालात ऐसे बने कि वो धाम छोड़कर आप जुदा हो गये, धाम की ईंट से ईंट बज गई और यह सब कुछ उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में खुद अपनी आँखों से देखा, समझते हो ! गुरुओं के पास जाते हो यह उमीद करो कि किसी गुरु ने तुम्हारी दुनियां की ज़िन्दगी को बदल देना है ! जो तुमने प्रारब्ध कर्म किये हुए हैं वो टल नहीं सकते । सत्संग से यह हो सकता है कि चूंकि तुमको ज्ञान हो जायेगा समझ आ जायेगी, तुम वो जो दुख सुख तुम्हारे सिर पर आते हैं उस के प्रभाव को कबूल नहीं करोगे। यह है गुर। तुम्हारे अपने मनोबल, अपने ही विश्वास का फल है। जो कुछ तुमको मिलना है, तुम्हें अपने ख्याल अपने विश्वास का फल मिलता है।

जो महात्मा ऐसे अज्ञानी जीवों से जो यह समझते हैं कि बाबा फकीर मेरे अन्तर आता है, मेरी मदद करता है, वह मुझ को पैसा देते हैं अगर मैं

उस पैसे को आप खा जाऊं तो मेरा पार उतारा नहीं हो सकता क्योंकि वो अन्न जो है उसमें धोखा है। यहां एक आदमी बैठा हुआ है, तांगा चलाया करता है। यह और एक जाट मुझ को अपने घर ले गये। सत्संग कराया। हम छः सात आदमी थे, इस के घर का खाया, इसका कोई ज़मीन का झगड़ा था। तो चूंकि यह मुझ पर विश्वास करता था। उसके विश्नास की वजह से उसकी मदद होती रही यहां तक कि वो कहता था कि जब फैसला हुआ तो थानेदार जिसने उसके विरुद्ध मुकद्दमा चलाया था उस में भी मुझ को ही देखता था। उस थानेदार ने इसी के ही हक में ही गवाही दे दी और यह मुकद्दमा जीत गया। इस विश्वास में यह लोग मुझे ले गये। इस बात का मुझे वहाँ जा के पता लगा। वहां उन्होंने भाखडा भी दिखाया, दो दो रुपया वहां से हर एक आदमी के लगते थे, वो भी उन्होंने दिये। शाम को लेटा हुआ था मकान पर, जब अभ्यास करने लगता, दिमाग़ के सामने खबर नहीं क्या कुछ आता। समझ नहीं आती थी दस बज गये। गोपाल दास सोया हुआ था, बोला हुक्का डाल दूं? मैंने कहा

भई, यह हालत हो रही है। सोचा क्यों ? अच्छा भई, मैं गया था वहां, उनके हां खाना खाकर आया हूं, दस रुपये मेरे हिसाब में से लेकर के मन्दिर में रसीद काट दे । जब मैंने ऐसा कहा, मैं सो गया, वो ख्यालात चले गये । यह है परदा रखने का फल ! इस वास्ते मैं पर्दा नहीं रखता । इस साफ ब्यानी का नतीजा क्या है ? यही नां ! कि मुझे कोई पैसा नहीं देता, मन्दिरों में हज़ारों रुपये देते हैं । बिलडिंग बना जाते हैं । दूसरी जगह रुपयों की बोरियां भरी जाती हैं । हरिद्वार में क्या हो रहा है ! तो हमारी अशान्ति का कारण यह है कि दूसरे का अन्न अनुचित्त ढंग से खाते हैं । अब मैं साफ ब्यानी कर देता हूं । जो ज्ञानी पुरुष हैं मेरे मिलने वाले, यह मेरी सेवा भी कर देते हैं, मन्दिर में भी देते हैं तो क्या मुझे पाप लगता है ? मुझे कोई दुख है ! कोई धोखा है !! कोहै फरेब है !!!

हमारे मन की अशान्ति का क्या कारण है ? हम चाहते हैं, क्या चाहते हैं ? शान्ति, उसका तो अपना कोई रूप नहीं ! न रूप है न रंग है न रेखा है, वो तो अलख, अपार, अगाध और अनामी है वो तो

अकाल पुरुष है, उसका तजुर्बा कैसे हुआ ? आप लोगों से हुआ। जो कुछ भी तुम मानते हो, वो तो तुम्हारा माना हुआ रूप है। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, लोग अपने भाव से मुझे बना लेते हैं अगर वो रूप जो उन के अन्दर प्रकट हुआ, उसको मालिक मानें, क्या वो मालिक है ? वो तो तुम्हारा अपना बनाया हुआ है। मालिक तो आधार है कूटस्थ है। दाता ने मुझ पर दया कर दी, उस घर को जाना चाहता था जो इस राधास्वामी मत में लिखा है। उस घर को देने और मेरे अज्ञान को मिटाने के लिये यह गुरुवाई मुझको दी थी। इस गुरु पदवी पर आने से मेरा अज्ञान मिट गया, कि वो मालिक कहाँ है। अब मुझ को मालूम हो गया कि मालिक मेरी ज़ात है। मैं उस में ऐसे रहता हूं जैसे मछली पानी में रहती है। वो तत्व है, वो आधार है, सूक्षम से सूक्षम तत्व वही है, मैं या मेरी सुरत, तुम्हारी सुरत मछली की सूरत में, जिस तरह मछली पानी में तैरती रहती है इसी तरह हमारी सुरत उस ज़ात के गति में आने से जो शब्द प्रकट हुआ, उस की जो चेतनता थी उस का नाम है सुरत। मैं इस में फंसा हुआ था, पता नहीं

लगता था, तीन तापों का मारा हुआ था, मुझको सुपथ पर लाने के लिये दाता दयाल जी ने बड़े कष्ट उठाये हैं। जब कभी उनके खेलों की जो उन्होंने मेरे साथ खेले, याद आती है तो दिल प्रेम, एहसान के जज्बे में भर जाता है। अज्ञानी जीव फकीर चन्द के साथ अज्ञानी बनकर उन्होंने यह सब खेल खेला, मेरे अज्ञान को मिटाने के लिये, और वो मिट गया। मेरा अज्ञान कि मालिक कहां है ? क्या है ? कैसा है ? मुझे समझ आई केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। किसी महात्मा ने आज दिन तक इस वर्णन शैली से सत्संग कराया है ? किसी ने नहीं कराया, समय बदल गया, स्थिति बदल गई। मेरे दाता दयाल ने सन १९३३ में जब सुनाम में सत्संग कराया था कहा था 'फकीर ! चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना, ताकि संसार पंथ भ्रष्ट न हो जाये, मज़हब व मिल्लत खतम हो जायेंगे'। अब तुम सोचो उस मालिक का असली रूप न जानने से इस प्रकार का परापोगेंडा करने से कि तुम्हारे अन्तर राम प्रकट होता है, तुम्हारे अन्तर फकीर चन्द प्रकट होता है, फलां महात्मा प्रटक होता है या

हनुमान प्रकट होता है, संसार को इस अज्ञान में रख कर, इस अज्ञान की वजह से इन्सानी नसल बट चुकी हैं। कोई हिन्दु, कोई सनातनी, कोई सिख, कोई मुसलमान कोई और कुछ। सन्तों का मार्ग इस संसार में सतज्ञान सच्ची एकता, सच्चा प्रेम और सच्चा जीवन गुज़ारने के लिये, कलयुग में प्रकट हुआ है। तो हमारी अशान्ति के क्या क्या कारण हैं, मैंने आपको वो बताये हैं। मन का कारण तो मैं ने तुम को बता दिया कि यह मन अज्ञान में आ कर विषय भोगों में जाकर इस अपने कल्पित संसार को सत मानता हुआ दुखी रहता है। इस का इलाज है सत्संग, ताकि सत्संग से तुम को सच्ची समझ आ जाये :-

पानी बिच मीन प्यासी, मोहे सुन सुन आवत हांसी।
आत्म ज्ञान विन सब झूटा, क्या मथुरा क्या कांसी।
घर में वस्तु धरी नहीं सूझे बाहर खोजत जासी।

मेरे साथ यही कुछ बीता ना ! मैं तो मालिक को ढूंडने के लिए सारी उमर इसी धुन में रहा ना ! दाता को बाहर समझता था, उन से प्रेम करता था सन्तरे ले जाता, प्रेम से चार चार दरजन उन के

मुंह में डाल देता, तुम को बताता हू कि गुरु किस तरह उद्धार करते हैं। मैं चार दरजन संगतरे ले के चला गया, प्रेम या अज्ञानी था, गोद में बैठ गया, चार दरजन संगतरे उनके मुंह में ठोसता गया, कहने लगे खुश हो ? मैंने कहां हाँ खुश हूं। मैं एक तरफ हुआ बाहर निकले, गले में उंगली डाली निकाल दिया। मैं आप को अपने अज्ञान की बातें बताता हू। बसरे से आया दो पैकट अच्छी खजूरों के ले आया, प्रेम से गोद में बैठ गया, वो सारी खजूरें खिला दीं। शाम को, सुबह जब उठा, जहां भी मैं और मैनेजर देखते, हर जगह चौका दिया हुआ, जिस तरह बच्चे टट्टी फिर देते हैं तो औरतें साफ करती हैं और चौका डाल देती हैं जगह जगह चौके दिये हुये थे। गौरी शंकर ने पूछा, महाराज ! क्या हुआ ? रात को फकीर आया, मुझे अमृत खिलाया, मेरा जितना गंद था सब निकल गया ! आह दाता ! वो मुझ से नाराज नहीं हुये कि तू ने क्या किया फकीर-चन्द ! मैं तुम को बताता हूं कि गुरु कौन है, किस तरह जीवों की संभाल करता है, अज्ञानी जीवों के साथ कैसे खेलता है ज्ञान देने के लिये।

एक अयोध्या प्रसाद सत्संगी होता था, वो रात को जब सोता खुराटे मारा करता था कि दूसरे आदमी रात को सो नहीं सकते थे, वो गया दाता दयाल जी के पास हैदराबाद, वहां नन्दुसिंह था, दाता ने कहा हमारे पास सो जाया करो, अब वो उनके पास सोता नहीं था, कहता था मैं रात को खुर्राटे मारूंगा तो आप *D sturb* होंगे, जब वो न आया, तो नन्दुसिंह से पूछते हैं कि भई ! अयोध्या प्रसाद कहां गया ? वो कहता है महाराज, मैं रात को खुराटे मारता हूं। तकलीफ होगी, तो कहते हैं बुलाओ उस को, वो खुराटे नहीं हैं, मेरे वास्ते लोरियां हैं लोरियां ! आह ! तुम को मैं गुरु रूप बता रहा हूं, गुरु क्या करता है जीवों के साथ, सात दिन रहा, उनके पास जमीन पर सोता था, रात को खुराटे मारता था। गुरु बनना, नाम देना आसान है जीवों की जिन्दगी की सम्भाल करके उनको राज बता देना, उन को शान्ति देना कुछ और बात है। मैं क्या बता रहा हूं आप को, सोचो ! तो हमारी अशान्ति का कारण क्या है, अज्ञान :—

मृग के नाभी माहैं कसतूरी बन बन खोजत ासी,
कहैं कबीर सुना माई साधा, सहज मिले अबनासी।

तो अविनाशी कब मिलेगा ? अगर कोई गुरु मिलेगा, मुझे एक ऐसा महापुरुष, परम तत्व आधार मालिक कुल के अवतार दाता दयाल महर्षि शिवब्रत-लाल जी महाराज मिले थे, जिन्होंने मेरा अज्ञान दूर कर दिया। चूंकि मेरे जिम्मे डियूटी लगाई गई थी कि निबल अबल अज्ञानी जीवों की सहायता करना, जगत कल्याण के लिये काम करना, जीवों का भवसागर से पार करने की तरकीब बताना, इसलिये गुरुऋण से उत्तीर्ण होने के लिये, मैंने अपनी जिन्दगी में जितना काम किया है और साथ ही ख्याल रखा है कि मेरी आत्मा पर भी कोई बोझ न आये, चार सौ बीस व धोखा देही का भी दोष न आये और मैं अपनी डियूटी भी पूरी कर जाऊं। इसलिए मैंने बड़ी सच्चाई से काम किया, देखो ! मुझे समझ नहीं आती थी, मैं गुरु को बाहर समझता था कि गुरु लाहौर रहता है या सतगुरु धाम में रहता है, वो कहा करते थे :—

गुरु तो तेरे पास फकीरा-गुरु तो तेरे पास !

मुझे इसकी समझ नहीं आती थी। मैं इतना बिषयविकारों में फंसा था छोटी उमर की शादी की वजह से चंचल था कि मुझे होश नहीं आती थी कि बात क्या है। मेरे अज्ञान को मिटाने के लिये उन्होंने क्या-क्या मुसीबतें सही, अब मैं समझता हूं कि उन्होंने मुसीबतें सही हैं :—

गुरु हैं तेरे पास फकीरा-गुरु हैं तेरे पास।
त्याग भरम विकार मन का-छोड़ जग की आस।
आस कर गुरु चरन की-सब से होय निरास।
तेरे मन में तेरे तन में-तेरे सांसो सांस।
गुरु बसे दिन रात प्यारे-धर चरन विश्वास।
गुरु नहीं तीर्थ बरत में-गुरु न योग अभ्यास।
ढूंढ अपने हृदय में नित-वहां उनका बास।
करम में माया है व्यारी- धरम यम की फांस।
बन में अनबन देखो मन में - भरम था सन्यास।
तेरी चिन्ता गुरु को होगी - क्यों है तुमको त्रास।
राधा स्वामी चरन गह - अज्ञान का कर नास।

मैं तो अपने हृदय में उनका रूप बना-बना उस रूप को गुरु मान के पूजा करता था कि नहीं पूजा करता था! तो चूंकि मुझे अपने गुरु के रूप की समझ

नहीं आती थी। उन्होंने यह गुरु पदवी दी थी और कहा था कि फ़कीरचंद ! तुझ को सच्चे सतगुरु राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। अब कमाल पुर वाली माई या कृषक या दूसरे आदमियों के अन्तर जब मेरा रूप प्रकट हुआ और मैं नहीं था तो मैं अपने गुरु को ढूंडने के लिये मजबूर हुआ कि न हुआ ! चूंकि मुझे पता लग गया कि मैं तो उन के अन्तर गया नहीं ! फिर वो गुरु कौन है जिस को इन्सान बना-बना कर पूजता है। जहां तक मानसिक दुनियां का ख्याल है, ऐ भोले इन्सान ! वो रूप जिस को तू गुरु मानता है, तेरे अन्तर में प्रकट होता है, वो तेरा अपना ही मन है।

मैं ऊंचा बोलता हूं, तुम बात को नहीं समझते ! अब मुझ में सतगुरु के रूप में, हेर फेर कर के झूटे दिलासे देने की ताकत नहीं रही ! सतगुरु कहते हैं, सच्चे ज्ञान को, जब मैं सतज्ञान का अवतार हूं तो मैं हेर फेर करूं या झूठी बात तुमको कैसे कहूं। सच्ची बात यह है कि तुम मेरे सत्संग के बराबर नहीं हो, इस को मैं जानता हूं, मगर अगर तुम को यह ऊंची बात न बताऊं तो तुम लुट जाओगे। मैं निबल, अबल, अज्ञानी

जीवों की सहायता के लिये आया हूं। तुम्हारे अन्तर अगर आज मेरा रूप प्रकट हो गया, तुमने यह समझा कि बाबा फकीर हमारे अन्तर प्रकट हुआ, जो होशियारपुर में बैठा हुआ है, ला के मेरी सेवा करोगे कि नहीं करोगे ? मुझे मुठि्यां भरोगे कि नहीं भरोगे ? मुझे पैसे दोगे कि नहीं दोगे ? कर्ज़ा उठा के भी दोगे कि नहीं दोगे ? अज्ञान के बस में। मैं इस संसार को लूट से बचाने के लिये आया हूं। मुझे अगर कोई इच्छा होतो रुपये की, मान की, दौलत की तो मैं इस बात को परदे में रखता और आज यहां एक बड़ा भारा आश्रम बना हुआ होता, हज़ारों रुपये का मैं मालिक होता और लाखों मेरे चेले होते। मैंने यह काम नहीं किया। दाता दयाल जो महाराज जो संसार में सत ज्ञान देने के लिये आये थे, वो क्या कहते हैं सुनो :—

यह मन समझन जोग. साधु यह मन समझन जोग ॥टेक॥
मन ही ज्ञान और मन ही ध्यान है मन ही मोक्ष और भोग।
मन में वेद को पढ़ते ब्रह्मा, शंकर करते योग।
मन ही अन्तर सृष्टि व्यापी, मन ही में है रोग।
मन गोविन्द मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग।
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही अनन्द सोग।

मन ही गुरु है मन चेला, मन ही ब्रह्म संयोग।
मन ही का व्यौहार जगत में, नाहीं जानें लोग।

मुझे यह समझ नहीं आती थी ! दाता कहते हैं फकीर, तेरे अन्तर ही सतगुरु है, यह समझ नहीं आती थी मेरी खोपड़ी में, यह समझाने के लिये यह मुझे काम दिया था। मैं परम दयाल हूं। आज दिन लक जितने महापुरुष हुये, यह सब दयाल थे। जिस ने सेवा की, नाक रगड़े, उस को भेद बताया बाकी चलते रहे ! उन्होंने इस राज़ को सेवा लेने के बाद दिया, मैं इस राज़ को बिन सेवा लिये मुफ़्त बांटता हूं मगर उस की कदर करता कोई नहीं ! मुफत चीज़ की कोई कदर नहीं करता। हम ने जिन्दगी बरबाद करने के बाद इस ज्ञान को प्राप्त किया है तब हम इस की कदर करते हैं। मुफत की कोई Value नहीं करता ! इस वास्ते आज दिन तक जितना संत मत हुआ है, महापुरुष गुज़रे हैं उन्होंने परदादारी से काम लिया। अब मेरे जिम्मे यह चूंकि डियूटी लगाई जगत कल्याण की, अब मैं मजबूर हूं. अपनी डयूटी का पूरा करने के लिये, इस को खोल जाने के लिये. क्यों ? ताकि इस समय इस मन के चक्कर की वजह से जो

इन्सानी नसल भिन भिन मतों में फिरकों और गद्धियों में बटी हुई है और हमारे अन्तर मैं झगड़े हैं, द्वेष है, नफरत है, हम आपस में इक्ट्ठ बैठ नहीं सकते क्योंकि एक मुसलमान है, एक हिन्दु है, एक साबन अश्रम का सत्संगी है और एक ब्यास का सत्संगी है, अब वो इक्ट्ठे नहीं होते, चूंकि मेरे जिम्मे यह डयूटी थी, इसलिये मैंनें गुरु ऋण से उत्तीर्ण होने के लिये, अपनी डियूटी को पूरा करने के लिये, इस राज को खुले शब्दों में खोल दिया। इस से हानी भी है, किन को ? जो बेचारे अभी मन के चक्कर में आये हुये हैं जो काल और माया में हैं, जिन के मन महा चञ्चल हैं। यह शब्द दाता दयाल ने उस समय लिखा था मुझे. जब मैं उन से प्रेम करता था और बसरे बग़दाद में था। तो आज शब्द था :—

अनुआ आतुर पुकार. कल नहीं पकड़े धीर न धारे।

इस का जवाब क्या देते हैं स्वामी जी :—

धीरज धरो करो विश्वास, अब करूं पूर्ण तुम्हारी आसा।

गुरु आसा कैसे पूरी करता है ? वो गुरु अपने बचन कहता है। जो आदमी सत्संग में जाकर बचन को नहीं सुनता और गुनता नहीं, वो इस रास्ते में

सफल नहीं हो सकता। दुनियाँ ने यह समझा हुआ है कि बस गुरु महाराज आये, फूलों का हार, दो रुपये और प्रसाद ला कर भेंट कर दिया, बस तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा, अगर इस से बेड़ा पार होता तो लाखों और हजारों आदमीयों का बेड़ा पार हो जाता यह स्थूल प्रसादी जो है, यह केवल इन्सान के दिल की चाह की प्रतीक (चिन्ह) है। जितना जिस में ज़बरदस्त जज्बा असलियत के जानने का होगा उतना ही उस ज़बरदस्त जज्बे से वो सेवा करेगा, समझ गये मेरे भाव को ! जितना ही ज़बरदस्त जज्बा किसी को अपनी शान्ति को प्राप्त करने का होग वो उस जज्बे के हिसाब से सेवा करेगा। जिसके पास धन नहीं होता वो दिल से सेवा करता है। जो कुछ उसके पास होता है वो उसके त्याग करने के लिये पेश कर देता है, गुरु के आगे, मालिक के आगे। संत जज्बे को देखते हैं। यह जज्बा है ! मैं इस जज्बे को लेकर १९०५ में गया था दाता के चरनों में, मैं जानता हूं इस जज्बे को। जब कोई मेरे पास आता है मैं उसके जज्बे को देखता हूं। अगर मैं देखता हूं कि उस के अन्तर इस चीज को हासल करने की ज़बरदस्त चाह है क्योंकि मुझे यह

विश्वास है कि जो कुछ इन को मिलेगा वो उस के जज्बे के अनुसार मिलेगा, मैं झट कह देता हूं कि जा तेरा काम हो जायेगा, उसका काम हो जाता है और वो Credit मुझे देता है।

मैं गुर बता रहा हूं, क्यों बता रहा हूं ? मेरी समझ में यह आया है कि इस समय संसार में जहां यह राजनोतिक दल की चार सौ बीस है, जहां हमारे घरों की लूट है, वहाँ सन्तों और महात्माओं और मजहबों की लूट है। हर जगह लूट है, अब मैं यह जानता हूं तो यह भाषन देता हूं। तुझे कौन देगा फकीर चंद, नहीं देता तो ना सही ! जिस ताकत ने मुझ को इस तालीम को फैलाने के लिये भेजा है, वो ताकत मरी हुई नहीं है वो जिन्दा है, मेरा काम निष्काम है, निष्कपट है, नि:स्वार्थ है। सच्चे दिल से मानव जाति का हितैषो बन के आवाज़ दिये जा रहा हूं कि ऐ इन्सान ! अगर तू शान्ति चाहता है, उस मालिक को चाहता है तो जो कुछ मैंने कहा है वो कर। मैंने नहीं कहा, यह सन्तों ने कहा है। मन, बचन, कर्म से शुद्ध रहने की कोशश करो। मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करो। शुद्ध कमाई

खाओ। प्रेम से अगर कोई तुम्हें देता है तो कोई बात नहीं! मगर हेरा फेरी कर के, चार सो बीस कर के किसी से अपना मतलब सिद्ध करते हो, यह तुम को रवा जायेगा।

मेरे घर पंझाल में हैं, जब मैं बग़दाद से वापस आया तो मेरा एक भतीजा था मुन्शीराम, उसकी ज़मीन मैं दो मकान बने हुए थे एक मेरे बाप ने मेरे और मेरे भाई के लिये बनाया और एक राम नारायण हवालदार ने अपने लिये बनवाया। मैंने पिता जी से पूछा कि यह जगह तो हमारी नहीं, हम को कैसे मिल गई? उन्हों ने बड़े गर्व से कहा यह मुन्शीराम बदचलन, अवारा हो गया था खर्च बहुत करता था। हम उसे उधार देते रहे, दस माँगे तो पंदरह लेजा भाई! उस ने बीस मांगे उन्होंने पच्चीस दिये। जब रुपया उस पर ज्यादा हो गया तो कहा अब ज़मीन बेच कर दे। हम ने इस होश्यारी से यह जमीन ली है। मेरे मुंह से निकला कि हम इस मकान में नहीं रहेंगे। आज दिन तक वही मकान खाली पड़ा है। भाई पता नहीं कहाँ चला गया, में कहाँ हूं।

मैं दुनियां को नाम की बजाय अचरन की ओर अधिक ध्यान दिलाता हूं, और इस तरफ लाता हूं। नाम के अधिकारी, जो भगवान को मिलना चाहते हैं, वो तो बहुत थोड़े आदमी हैं। हम लोग हेरा फेरी करते हैं। इसका नतीजा हम भुगतते हैं. स्वामी जी की बाणी है :—

कर्म जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ना।

यह मेरी जिन्दगी के अपने अनुभव हैं तो इस लिये चूंकि मेरे जिम्मे डियुटी थी, कहना मेरा कर्तव्य है राज़ को मैं खोल चला, असलीयत बता चला, किसी की इच्छा है, कोई इस पर अमल करे या ना करे

गुरु बचारा क्या करे - जो हृदय भया कठोर।
नौ नेज़े पानी चड़ा - तो भी ना डूबो कोर।

तुम को जो शान्ति नहीं मिलती, इसके कारण मैंने बता दिये, अपने शरीर की सेहत का ख्याल रखो। यह नहीं मेरा मतलब कि तुम औरतों को छोड़ दो, नहीं ! अपने आप को कंट्रोल (Control) में रखो, एक खास बात कहे जाता हूं, जो मेरे तजुर्बे में

आई है। नौजवान बच्चों के लिये, कि अपने चाल चलन का ख्याल रखो। मानसिक व्यभचार से बचने की कोशश करो। यह जितने ज्यादा आदमी Devotional हैं। जो अधिक अशान्त हैं। ज्यादा राम को मिलना चाहते हैं मेरे जैसे, यह वो आदमी हैं जिनके मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य गिरे हुए हैं इन में से एक मैं था। मुझे कोई शर्म नहीं आती कहने में! तुम बच्चों के चालचलन का ख्याल रखो। मगर रखोगे कैसे? जैसे तुम हो वैसी तुमने सन्तान पैदा कर दी। जो ख्यालात मां बाप के होते हैं वो बच्चों पर जाते हैं। मैं उदाहरण दिया करता हूं कि अभिमन्यु मां के पेट में रहता हुआ अर्जुन के चक्करव्यू बेधने का ज़िक्र सुन कर संस्कार ले सकता है तो बच्चा जब हमारी माताओं, बहनों के पेट में है और वो भोग करते हैं, कामातुर होते हैं तो क्या उस बच्चे में काम नहीं जायेगा? ज़रूर जायेगा, वो समय से पहले कामी हो जायेगा, उसके बस की बात ही नहीं है। बच्चे का क्या कसूर! जिस प्रकार के जज्बात मां के होते हैं, बाप के होते हैं, वो बच्चे पर जाते हैं और बच्चे वैसे ही बनेंगे। मैं गया

जालंधर, वहां एक गार्ड है, उस के बच्चे आपस में लड़ते रहते हैं, शिकायतें लाते हैं, फलां ने मुझे मारा, दूसरे लड़के ने मेरे साथ यह स्लूक किया ! जब वो गार्ड डियूटी से आया. बच्चों ने शिकायत करनी शुरू कर दी ! इस बार मैं गया, मास्टर मोहन लाल मेरे साथ थे, वो कहता है पन्डित जी ! आप के सत्संग सुने मैंने, हम चार भाई हैं किसी के सन्तान नहीं सिवाय मेरे। मेरे भी दो बच्चे मर गये थे पहले। मैं सोचा करता था, मेरे बच्चे हो जाये, तो जब मैं आऊं तो कोई इधर से शिकायत् करे, कोई उधर से शकायत करे, खुशी लेता था इस में, वो कहता था जैसा मैंने सोचा वैसा हो गया ! समझ गये मेरी बात को मैं ने क्या कहा ! एक बात !

दूसरी मिसाल, में अमृतसर गया, वहां बिशनदास प्रेम है, उनके हां एक लड़का है अमरजीत यह उस समय पैदा हुआ था जब पाकिस्तान की लड़ाई थी। वो कहते हैं जब यह बच्चा डेड़ साल का हुआ यह कुछ नहीं कहता था स्वाय तोप लाओ, बन्दूक लाओ, मैं दुश्मन को मारूंगा। ढेड साल का बचा बोलने लगा तो वो

ऐसी बातें करता था। वो क्यों करता था ? क्योंकि उस समय लड़ाई लगी हुई थी, वो मां के पेट में था, उस औरत के दिल में यह ख्याल आता था, नहीं समझ में आती है ? मैंने क्या कहा तुम लोगों को ! इसलिये मैं, रूहानियत तो एक तरफ रही तुम को जीने का राज़ बताता हूं, "How to live in the world." तो यह आस करते हैं इस वक्त कि मानव जाती सुधर जाये ! कभी नहीं सुधर सकती, There can be no peace. अमन आ ही नहीं सकता ! जितनी यह संसार में मानव जाति इस वक्त पैदा की हुई है, यह क्या सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा की गई है ? यह खुदरो औलाद है, जज्बाती औलाद है तो फिर अगर हर देश में अशान्ति है तो कोई क्या करे ! किसी ने कोई फूंक मार देनी है ? लाख किसी महात्मा को बुला लो कोई मदद कर जाये ! तुम्हारी कौन मदद कर सकता है ? ऐ इन्सान तेरी मदद तू आप कर सकता है। गुरु ज्ञान है, संगत में बैठ कर जीने का राज सीखो "How to live tn this world." कैसे तुम दुनियां में जीओ।

यह एक दिन का काम नहीं है, हर आदमी की प्रकृति जुदा जुदा है, इसलिए यह गुरु मत है अपनी अपनी तकलीफों को अपने गुरुओं को बताओ। अब तो मैं एक हूं, किस किस की सुनूंगा। लोग जान खाते हैं, मगर मैं गुर बता चला, जिस से कि इन्सानी नसल अगर चाहे तो इस राधा स्वामी-मत या कबीर मत या संतमत जो असली मज़हब, है असली मज़हब क्या है ? अपने संकल्प को ठीक रखो ! शिव सकल्पं अस्तु, यही एक उपाय है अगर इससे पार जाना चाहते हो तो अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पकड़ो, क्यों ? जब तुम मरने लगोगे, अगर तुम्हारे सामने कोई रूप न आया, कोई शक्ल न आई, केवल प्रकाश आया और शब्द आया तो तुम फिर मुड़ कर इस चोले में न आओगे। जब तक किसी को अन्त समय में शब्द और प्रकाश नहीं होता उसका आवागमन कभी भी छूट नहीं सकता। हिन्दु शास्त्रों के मुताबिक और राधास्वामीमत के मुताबिक।

आज कल ऐक और ख्याल दिया गया है जीवों को, नाम ले लो और तुम को अन्त समय सतगुरु सत

लोक ले जायेगा। इन गुरुओं ने यह प्रापेगेन्डा कर के महा अनर्थ किया है, जीवों के रास्ते में रूकावट डाली है, क्यों ? राधास्धामीमत के चलाने वाले हजूर महाराज राय सालिग राम साहिब साफ लिख गये प्रेम बानी में कि अन्त समय में जिस से तुम्हारा सम्बन्ध होता है, वो फिल्म चलती है, अगर ख्यालात गदे हैं तो शेर बिच्छु आजायेंगे, अगर ख्याल अच्छे हैं तो अच्छे आदमी आ जायगे, जिस से नाम लिया हुआ है वो गुरु भी आ जायेगा, वो तुम को नाम भी सुना देगा। कुछ देर तक ऊपर के लोकों में रहोगे, वहां सत्संग गुरु का मिलता रहेगा, जब फिर कोई सत गुरु संसार में आवेगा तुम को फिर योनी मिलेगी और तुम उसके सम्पर्क में आओगे। फिर उससे बाकी ज्ञान हासिल करके तुम अपने जन्म मरण से रहित होकर प्रकाश और शब्द में लय हो जाओगे। मैं कैसे मान लूं, गुरु आकर सत लोक को ले जायेगा। जब यह लिखा हुआ है हजूर महाराज की किताब में, जिन्होंने राधास्वामी नाम को प्रकट किया। तो मैंने इस डर के मारे कि भाई ! तू दाढ़ी बढ़ा कर अपने आप को सतगुरु कहता है, अगर अन्त समय

में कोई भाव तेरा खराब हो तुम को शब्द न आये, प्रकाश न आये किसी सुपने में चला जाये तो फिर तुम को योनी मिलेगी या नहीं मिलेगी ? मिलेगी। तो मैंने इस हेरा फेरी से अपने आप को बचाने की कोशिश की। अगर योनी मिलेगी तो कम से कम जो कुछ मैंने यहां किया हुआ है उसी का फल मुझे मिलेगा ना ! इस वास्ते मैंने गुरु पदवी पर आकर इस राज़ को खोल दिया किसी पर एहसान नहीं किया, अपनी आत्मा को साफ रखने के लिये मैंने इस सच्चाई का भाषन दिया, इस ससार को व अपने जैसे दीवानो को सच्चा ज्ञान देने के लिए कि तुम लुट रहे हो।

ऐ इन्सान ! मालिक यहां नहीं रहता है वो अकह अपार अगाध अनामा है। जब तुम सब चीज़ों को छोड़ जाओगे तो अनामपद में चले जाओगे जो तुम्हारा रूप है। जब तक इस ससार में हो, ईश्वर की पूजा क्या है ? मैं कहा करता हूं कि अगर सूर्य यहां आ जाये तो तुम आग हो जाओ और अगर मालिक यहां आ जाये तो यहां तो स्वाये प्रकाश के कुछ भी न रहेगा ! हम सब खतम हो जायेंगे, तो इस दुनियां में ईश्वर पूजा क्या है ? ? वो उस मालिक की किरण

हर एक इन्सान में आई हुई है, इन्सान इन्सान की सेवा करे, मगर तुम लोग सब इन्सानों की सेवा अकेले कर सकते हो ? जिन को कुदरत ने तुम्हारे साथ लगाया है, जो तुम्हारे बूढ़े मां बाप हैं, भाई हैं, रिश्तेदार हैं, जो तुम पर निर्भर हैं उनकी सेवा सब से पहले करो। यह है मेरा पैग़ाम, सन्त सत गुरु की हैसियत में, मैं यह पैग़ाम दिये जाता हूं जीवों के कल्यान के लिये।

सब को राधास्वामी

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

पत्र नं० १

प्यारे प्याई ! राधास्वामी

मुझे खुशी है कि तुम बीन का शब्द सुनते हो मगर साथ ही मुझ को होशियारपुर समझते हो, मैंने जो कुछ संतमत में हासिल किया है उस के आधार पर कहना चाहता हूं. "जब तक इंसान मन के रूप को समझ कर अपनी सुरत से शब्द को नहीं पकड़ता, उस को संसार में मन समय समय पर गिराता रहेगा।

असली व सच्चा सदगुरु शब्द है और सच्चा मालिक शब्द का आधार परम तत्व है, यह मेरे जीवन का अनुभव है गो मैं यह जानता हूं कि अपने आप को मन से हमेशा अलग करना एक महान् कठिन कार्य है।

प्यारे भाई-तुम भाग्यवान हो और मैं चाहता हूं कि तुम इस संसार के भवसागर से हमेशा के लिये

निकल जाओ। आप की यह सहानुभूति कि मुझे सपने में रेलगाड़ी व तार न आवें, का धन्यवाद। मैं भी कोशिश करता हूं मगर प्रकृति का नियम ऐसा है कि जब तक इन्सान सुरत से शब्द को न पकड़े और यह यक्कीन न हो जाये कि यह मन भी सूक्ष्म माया है, उसे परम शान्ति नहीं मिल सकती। मेरा अनुभव है कि जब तक जीवन है दुख सुख जो मन की कल्पना है, ज़रूर आयेंगे। मगर मैं जाग्रत में समझता हूं इसलिये काम करता हुआ निःकामी हूं। मुझे यह ज्ञान है कि यह मन माया व काल का चक्कर है। मैं आप को अपने से ज्यादा अच्छा व मुबारक समझता हूं कि आप को पुराने सस्कारों के कारण शायद सपने नहीं आते हैं, खुश रहो। मैं आप को सदगुरु रूप समझ कर नमस्कार करता हूं, मगर जब मैं यह देखता हूं कि आप गुरु को होश्यारपुर समझते हो तो मुझे आप की रहनी पर शक पड़ता है।

दाता दयाल जी का एक शब्द है :-

"ढूंढ मुझ को अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूं।
न मैं काशी न मैं मथुरा न मैं गिर केलास हूं।

इस शब्द में एक जगह कहा है कि मैं तेरे दिल की सच्ची हूं। एक और शब्द में दाता ने लिखा है :—

शब्द सुनते ही मेरा अन्तर में चित्त को साध कर।
सूरत मेरा रूप है, इस को समझ लेना यहीं।

मगर याद रखना दोस्त! प्रारब्ध कर्म सब को भोगना पड़ता है। संत हो परम संत, कोई भी इस से नहीं बचता। अनुभव की दृष्टी से कर्म भोग, राज समझने या भेद जानने के बाद जब तक शरीर है, बाहर के गुरु का एहसान रहता है. जो एहसान नहीं मानता कबीर के कथन के अनुसार ग़लती करता है :-

कामी तरे क्रोधि तरे पापी तरे अंनत।
आन उपासक कृतघन तरे न नाम रटंत।

आपका
फकीर

पत्र नं० २

प्यारे भाई, राधास्वामी

तुम कहते हो कि तुम को कोई सांसारिक इच्छा नहीं रही। मेरे साथ प्रेम रखना क्या साँसारिक इच्छा नहीं ? झूट बोलना कब से सीखा है ? बाहर के गुरु से प्रेम रखना भी आवागवन में फंसना है। केवल बाहर के गुरु की बात को समझ कर अमल करना है। यदि हज़ूर महाराज राय सालिग राम साहिब अपनी प्रेम बानी में यह न लिखते कि गुरु शब्द स्वरूप है और उस के चरन प्रकाश हैं तो मैं राधास्वामीमत के विरुद्ध आवाज़ दे जाता।

बाहर में कौन किसी का साथी बना ! बात को समझो और अपने आप में ठहरने का यत्न करो वरना दूसरे जन्म के लिये तैयार हो जाओ।

इस पत्र को सत्संग में सत्संगियों को सुना देना।

आपका

फकीर

पक्षपातियों का पक्षपाती भगवान

लेखक :--श्री बृजलाल जी सेवक, हिमाचल प्रदेश ।

हम संसारी अज्ञानी पक्षपाती मनुष्यों ने भगवान को भी पक्षपाती ही समझ लिया है और उस के नाम पर उसे खुश करने के लिये महा उपद्रव कर डाले हैं, ऐसे ही एक उपद्रव की झलक नीचे लिखी पढ़िये :-

सन उन्नी सो संतालीस में था जवानी पर शैतान ।
तो मारें खाते पिटते देखा लोगों का भगवान ।
अल्ला जी के हाथ छुरे थे, वाहगुरु जी के हाथ तलवार ।
हरि के हाथ थे विराट कुल्हाड़े, करें धड़ा धड़ मार धाड़ ।
भगवान को हम ने बिकते देखा, वागा बार्डर के मैदान ।
मुस्लिम बेचें शिव और ठाकुर, हिन्दु बेचते फिरें कुरान ।
दो पैसे को ठाकुर बिकें आठ आने को बिके कुरान ।
चार-चार आने बिकते देखे, भागवत गीता और रामायण ।
विरान और उजड़े मन्दिर देखे, रोता होगा कहीं भगवान ।
मसजिदें भी मिसमार पड़ी थी, सिर को पीट रोय रहमान ।
उजड़ी मसजिद देख कर, रिफ़्यूजी हुआ बेताब ।
मेरी तरह खुदा का भी, खाना हुआ खराब ।
हिन्दुओं को मन्दिर में, भगवान नहीं मिलता ।
मुस्लमानों को मसजिद में, रहमान नहीं मिलता ।
भगवान और रहमान की तो बात क्या सेवक ।
जब इन्सान को इन्सान में इन्सान नहीं मिलता ।

पत्र नं० ३

यह जितने आदमी अपने गुरुओं का जन्म दिन मनाते हैं इन में से कोई भी अन्तिम सोपान पर नहीं पहुंच सकता, आप पूछेंगे क्यों ?

गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का और विवेक का, वो न जन्मता है न मरता है, सत कबीर ने कहा है :—

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध ।
दुखी होयें संसार में आगे जम का फंद ।
गुरु किया है देह को सतगुरु चिन्हा नाहिं ।
कहे कबीर ता दास को तीन ताप भरमाहिं ।

और जो गुरु लोग अपनी जिन्दगी में अपना जन्म दिन मनवाते हैं और खुश होते हैं, यह भी परम गति प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि कोई इन्सान भी गुरु नहीं हो सकता । दुनियां में भेड़ चाल है ।

बाहर के गुरु के जो बचन हैं (अगर वह कोई गुरु है तो) वो बचन गुरु हैं जो अन्तर और बाहर में हैं । ऐ इन्सान ! वो जात है, तत्व है और हर एक इन्सान की जात उसी की अंश है । इस समझ के बगैर इन्सान इस दुनियां में भटकता फिरता है और हर एक

मजहब, हर एक धर्म खाह कोई भी हो, हम अज्ञानियों गृहस्थियों को मूर्ख बना के लूटते हैं। जहां तक परमार्थ का सम्बन्ध है, मैंने लाख रुपये की बात कही है।

फकीर

मेरी करबद्ध प्रार्थना

भारत वासियो! बचपन से किसी चीज़ की तलाश जिस को मैं मालिक या राम समझता था, एक दृश्य द्वारा सन् १९०५ ईसवी में हजूर दाता दयाल महर्षि शिव व्रत लाल जी महाराज के चरनों में ले गई। उन्होंने सन्तमत दिया। इस सन्तमत के समझने में या जिस चीज़ की तलाश थी उसको पाने में बानवे साल का हो गया। अब वह चीज क्या निकली? वह एक अवस्था है जहां मैं अपनी हस्ती को, हैपने को भूल जाता हूं, जो कुछ बाकी रह जाता है उस को ब्यान करने के लिये शब्द नहीं मिलते। बस यह मिला मुझे।

क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता, जगत कल्याण और साथ ही जीवों को भव सागर से पार करने का काम लगाया था जिसे आज अड़तीस साल से करता हुआ चला आ रहा हूं, मैं ने जो काम किया यह मेरे निज अनुभव के आधार पर है अथवा आप बीती को सामने रखते हुए किया।

गुरु आज्ञा का पालन करने के सिलसिले में मैं ने मानवता मन्दिर की नींव रखी। जो कुछ मैं ने कहा वह पुस्तकों अथवा मानव मन्दिर पत्रिका के रूप में आज कल प्रकाशित होता है। ब्राह्मण होने के नाते जो प्रकाशन मन्दिर मे होता है उस का मूल्य नहीं रखा क्योंकि ब्राह्मण के लिये वेद बेचना पाप है, वेद नाम है ज्ञान का। पुस्तकें बड़ी होती हैं और दिन प्रति दिन मांग बढ़ रही है। इस लिये मैं हाथ बांध कर कहूंगा कि जिन सज्जनों को मेरे अनुभव से सहमति न हो यदि किताबें मंगवाकर, क्योंकि यह मुफ्त मिलती हैं, मन्दिर की हानी न करें।

अब किताबें अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में भी मिलती हैं जो कि निम्न लिखित हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ, 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6 ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਸੱਚਾ ਸਨਾਤਮ ਧਰਮ ਅਥਵਾ ਸੱਚਾ ਮਾਨਵ ਧਰਮ

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans
2. A word to Canadians
3. Manavta the true religion
4. Religious Research
5. Weight of Soul
6. Truth Always Wins
7. Essence of Truth
8. Science of God Realization
9. True Sanatan Dharama or
   True Religion of Humanity
10. Jeewan Mukti

जिन को जरूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम बिना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इस लिये जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैं ने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर आचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, सामाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों को साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह उसी

साल में खर्च करना पड़ता है इसलिये मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिये तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल व होमियोपैथिक खोले हुए हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिए आते हैं। इस लिये अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर यह विनती अवश्य करूंगा कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो ! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संतमत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध करने के लिये नहीं किया। मालिक के मिलने की तलाश थी जिस को हम इश्वर परमेश्वर समझते थे। मेरा भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामी मत में ले आया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदान्त या सूफीमत तक का भी खण्डन किया हुआ है। आत्मा खण्डन सहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने काम दिया था। तुम ही सोचो, राधास्वामीमत वालों की किताबों में संतों की इतनी

बड़ाई लिखी हुई है कि वह ईश्वर परमेश्वर के पैदा करने वाले हैं, बस, इसी एक राज़ को जानने के लिये मैंने अपना जीवन खो दिया कि संतमत वालों के पास क्या चीज़ है जो ईश्वर और परमेश्वर को भी पैदा करने वाले समझते हैं। दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास तो नहीं टूटा मगर बानी भेद नहीं देती थी। इसलिये प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा और दाता जी ने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने भी हुक्म दिया था कि निर्भय होकर काम कर जाना, सो कर चला, मेरा निज अनुभव मानता है कि संत बनना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर समय समय पर संतपने की हालत तारी होती है, चोबीस घण्टे नहीं। अब यह प्रार्थना है कि यह संसार मेरे लिए सदा के लिये लोप हो जाय और अपनी हस्ती खो कर ज़ात में समा जाऊं मगर यह उसकी इच्छा है।

फकीर

मेरी ग़लतियां

एक व्यक्ति श्री हरबन्स सिंह बल जो व्यास का सत्संगी है, जब मैं यहां नहीं था तो आया था। उस का आज बहुत लम्बा चौड़ा पत्र प्राप्त हुआ। उसने मेरे काम पर अनेक प्रकार से नुक्ताचीनी की है। मैं बहुत खुश हुआ। इन्सान को अपने कर्मों द्वारा की गई ग़लतियों का कई बार पता नहीं लगता। मैं इस सज्जन का आभारी हूं। दोष निवारण करने वाले को गुरु कहते हैं। इस लिये उस को सत्गुरु का रूप समझ कर नमस्कार करता हूं।

मैं अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश करता हूं। जहां तक मेरी नीयत का सम्बन्ध है मैंने कभी निजी स्वार्थ, मान प्रतिष्ठा और धन के लिये कभी कोई काम नहीं किया। हां, सन्तमत को समझने के लिये मैंने आयु खो दी। अपने निज अनुभव के आधार पर जो मैंने सन्तमत को समझा या अनुभव किया, जब उस को व्यक्त करने का समय आता है या वर्णन करता हूं

तो स्वाभाविक ही दूसरों का खण्डन हो जाता है जिस तरह संत कबीर, स्वामी जी या अन्य सन्तों ने राम कृष्ण को काल का अवतार, देवी देवताओं का खण्डन और वेदान्त व सूफीमत को कालमत में कहा। सन्तों की यह बानियां पढ़कर मेरे मन को ठीस लगा करती थी। इसी नियम के अनुसार अपने अनुभव के अधार पर मैंने जो सन्तमत को समझा उस को व्यक्त करने में सम्भव है किसी का खण्डन हो गया हो जिस में मेरी नीयत नहीं थी। तो मैंने उन का उपकार माना मगर यदि इन संतों को सब धर्मों का खण्डन करने का अधिकार था, मैं इन को ग़लत नहीं कहता, वो मुझे भी अधिकार है। इस लिये अगर किसी को मेरे भाषण या लेख से बुरा लगे तो मैं क्षमा चाहता हूं मगर जो सच्चाई है, जो मैंने अनुभव किया है उस को व्यक्त करने के लिए मैं विवश हूं और यदि जो सच्चाई व वास्ताविकता मैंने समझी है वह ग़लत है तो मैं जिम्मेदार नहीं हूं। इस की जिम्मेदारी महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज और बाबा सावन सिंह जी महाराज पर आती है। उन्होंने मुझे यह काम क्यों दिया ? दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया

था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना मेरा कोई निज स्वार्थ नहीं यद्यपि इस द्वन्द की रचना में अन्तर आते रहते हैं और सदा आते रहेंगे अगर किसी व्यक्ति को मेरे साहित्य व भाषणों से सहमती न हो तो इन को न पढ़े और न सुने, मैं तो गुरु और बाबा सावन सिंह जी के हुक्म को मानने के लिये विवश हूं, हां, अगर मेरी ग़लती है तो मैं उस सच्चे मालिक से प्रार्थना करता हूं कि मुझे सीधे रास्ते पर ले चले।

भारत वासियो ! मेरे भावों व विचारों को अगर कोई महात्मा ग़लत समझता है तो वह मेरा सुधार कर दे मुझे खुशी होगी। मैं कोई दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा है वही ठीक है। हर एक व्यक्ति को अपने निज अनुभव व्यक्त करने का वर्तमान प्रजातन्त्र में अधिकार है। इन सन्तों ने सनातन धर्म व अन्य धर्म वालों का कितना खण्डन किया है हुआ है, मेरे अनुभव के साथ फिर भी सन्तमत की ऊंची बानियां और दाता दयाल जी महाराज के ऊंचे शब्द सहमत हैं।

फकीर

From					To				
Place	Date	Departure Time	Train No.	Flight No.	Place	Date	Arrival Time	Train Time	Fligh
Hoshiarpur	28-1-79	19—20	9JH/34DN	—	Delhi	29-1-79	5—00	Kashmir Mail	—
Delhi	30-1-79	9—00	—	IC403	Hydrabad	30-1-79	10—55	—	IC 40
Hydrabad	8-2-79	10—10	—	IC120	Bombay	8-2-79	11—25	—	IC 12
Bombay	13-2-79	9—55	—	IC113	Bhopal	13-2-79	12—45	—	IC 11
Bhopal	15-2-79	6—30	34Dn Pass	—	Ujjain	15-2-79	10—57	34DnPas.	—
Ujjain	18-2-79	9—00	By Road	—	Indore	18-2-79	10—30	By Road	—
Indore	21-2-79	12—15	—	IC 460	Delhi	21-2-79	15—50	—	IC 46
Delhi	22-2-79	9—00	By Road	—	Modinagar	22-2-79	10—00	By Road	—
Modinagar	24-2-79	—	By Road	—	Aligarh or Bilari	24-2-79	—	By Road	—
Aligarh or Bilari	26-2-79	—	By Road	—	Mathura	26-2-79	—	By Road	—
Mathura	1-3-79	—	By Road	—	Delhi	1-3-79	—	By Road	
Delhi	3-3-79	20—50	33UP/4JH	—	Hoshiarpur	4-3-79	6—25		

REMARKS:-1. Stay at Delhi Behind Shop No, 106, Shankar Rd., Market, New Rajinder Nagar, N. Delh
2 Stay in Andhra Pradesh upto 8-2-79 3. Stay at Bombay upto 12-2-79.

Tour Programme of the party accompanying Hi

From				To				Remarks
Place	Date	Departure Time	Train Time	Place	Date	Arrival Time	Train Time	
Hoshiarpur	28-1-79	19—20	34 Dn	Delhi	29 1-79	5—00		
elhi	29-1-79	19—30	16Dn Exp.	Khazipet	30-1-79	21—05		
ecundrabad	7-2-79	20—55	32Dn Exp	Bombay VT	8-2-79	13—50		
ombay V-T	12-2-79	16—30	5 up Mail	Bhopal	13-2-79	7—33		
hopal	15-2-79	6—30	34 Dn	Ujjain	15-2-79	10—57		
ndore	20-2-79	16—50	72 Dn	Ratlam	20-2-79	20—75		
atlam	20-2-79	20—43	23 up	Delhi	21-2-79	12—55		

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022

500028 Hyderabad

JANU[illegible]Y 10th 19..
NW—HSP—7.

Regd. No. 20265/74
MANAV MANDIR

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H.No. 10-3-194/8
Hamayun Nagar
A.P.